सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

सितम्बर, 2013 वर्ष 12 अंक 07

हज का सफ़र

हो मुबारक आपको हज का सफ़र।
हो इबादत रात दिन शामो सहर।।
नेकियां हर–हर क़दम पर हैं लिखीं।
और गवाही उनकी जिन पर हो गुज़र।।
रौज़े पर जाकर पढ़ेंगे अब सलाम।
जिसकी ख़्वाहिश रखते हैं जिन्नो बशर।।
फिर ज़ियारत काबे की उस का तवाफ़।
और सई करना खुदा के हुक्म पर।।
दिन बिताना नौ को फिर अरफ़ात में।
जागना मुज़दलफ़ा में फिर ता सहर।।
कंकरीयां ले के फिर मरमा में जा।
मारना इक इक से फिर शैतान पर।।
नहर करना हल्क़ फिर जा कर तवाफ़।
करना हर इक रुक्न अपने वक़्त पर।।
करके काबे का वदाई फिर तवाफ़।
हो मुबारक वापसी फिर अपने घर।।

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप ज़ल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
हज का मुसाफिर	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	8
मारक़–ए–ईमान व माद्दीयत	मौलाना अली मियाँ नदवी रह0	12
इस्लाम की गुर्बत	मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी	14
कोई न आया मगर रहमते आलम	मौलाना ख़ालिद ग़ाज़ीपुरी	17
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	19
तालीम के जदीद वसायल	अब्दुल अजीम मुअल्लिम नदवी	21
मय्यित के हुकूक़	इदारा	24
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	28
मानवता का संदेश	इदारा	35
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बक़रः

अनुवाद :- और उससे बड़ा जालिम कौन जिसने मना किया कि अल्लाह की मस्जिदों में अल्लाह का नाम लिया जाय, और कोशिश की उनके उजाड़ने में[1], ऐसों की लायक़ नहीं कि दाखिल हों उनमें मगर डरते हुए[2] उनके लिए दुनिया में ज़िल्लत (अपमान) है[3] और उनके लिए आखिरत में बड़ा अज़ाब है(114)। और अल्लाह ही का है पूरब और पश्चिम सो जिस दिशा में तुम मुँह करो वहां ही अल्लाह मुतवज्जह है[4]। बेशक अल्लाह बेइन्तिहा बखशिश करने वाला सब कुछ जानने वाला है[5](115)। और कहते हैं कि अल्लाह रखता है औलाद (बेटे और बेटियाँ) वह तो सब ऐबों से पाक है बल्कि उसी का है जो कुछ है आकाश और ज़मीन में सब उसी के ताबेअ़ है(116)।

तफ्सीर (व्याख्या):-

1. इसके शाने नुजूल ईसाई हैं कि उन्होंने यहूद से मुक़ातला (लड़ कर) करके तौरेत को जलाया और बैतुल मक़दिस को खराब किया, या मुश्रिकीन मक्का कि उन्होंने मुसलमानों को केवल पक्षपात व वैर से हुदैबिया में बैतुल्लाह में जाने से रोका इसके अतिरिक्त भी जो व्यक्ति किसी मस्जिद को वीरान या खराब करे वह इसी हुक्म में दाखिल है।

2. अर्थात इन कुफ़्फ़ार के मुनासिब यही था कि अल्लाह की मस्जिदों में डर व आदर और मान सम्मान के साथ दाखिल होते, कुफ़्फ़ार ने जो वहां का अपमान किया यह स्पष्ट अत्याचार है। या यह मतलब है कि उस मुल्क में हुकूमत और सम्मान के साथ रहने के योग्य नहीं। चुनांचे यही हुआ कि मुल्के शाम (सीरिया) और मक्का को अल्लाह ने मुसलमानों को दिलवा दिया।

3. अर्थात दुनिया में पराजित हुए, गिरफ्तार हुए, और मुसलमानों के बाज गुजार (चौथ देने वाले) हुए।

4. यह भी यहूद व नसारा (ईसाई) का झगड़ा था कि हर कोई अपने क़बीले को उत्तम बताता था। अल्लाह तआला ने फरमाया कि अल्लाह मख़्सूस (विशेष) किसी तरफ नहीं बल्कि जगहों और दिशाओं में सीमित नहीं है परन्तु उसके हुक्म से जिस तरफ मुंह करोगे वह मुतवज्जह है, तुम्हारी इबादत कुबूल करेगा। कुछ ने कहा सफर में सवारी पर नवाफिल पढ़ने के सिलसिले में यह आयत उतरी, या सफर में "क़िब्ला" के बारे में शक हो गया था जब उतरी।

5. अर्थात उसकी रहमत सब जगह सामान्य है एक जगह के साथ खास नहीं और बंदों के हितों और उनकी नियतों और कामों को खूब जानता है कि बन्दों के हित में कोन सी चीज़ फायदेमंद है और कौन सी नुकसान देह, उसी के मुवाफिक हुक्म देता है और जो उसकी मुवाफकत करेगा उसको अच्छा बदला और विरोधी को दण्ड देगा।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें

सफों की दुरुस्ती नमाज़ की तकमील है —अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत अनस रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सफों को बराबर करो, सफों की दुरुस्ती नमाज की तकमील (पूर्ति) है। (बुख़ारी–मुस्लिम) और बुखारी की एक रिवायत में है कि सफ का बराबर करना नमाज़ का कायम करना है।

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत हे कि नमाज़े जमाअत की इकामत (तकबीर) कही जाती है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारी तरफ मुतवज्जेह हो कर फरमाया तुम अपनी सफों को सीधा करो और एक दूसरे से मिल जाओ, मैं तुम को अपनी पीठ के पीछे से भी देखता हूँ। (बुख़ारी)

बुख़ारी की एक रिवायत में है कि हम लोग अपने कंधे अपने साथी के कंधे से और अपने कदम (पैर) अपने साथी के कदम से मिला लेते थे।

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है, फरमाते थे कि अपनी सफों को बराबर करो, अन्यथा अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों में मुख़ालफत (मतभेद) डाल देगा। (बुख़ारी–मुस्लिम)

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारी सफों को इस तरह बराबर करते थे मानो पांसे बराबर करते हों, यथा आपको मालूम हो गया कि हम लोग अब समझ गये हैं, फिर एक दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाये और करीब था कि तकबरी कही जाये इतने में एक आदमी का सीना सफ से निकलता हुआ देखा, फरमाया अल्लाह के बन्दो सफों को खूब बराबर कर लिया करो, वरना अल्लाह तआला तुम्हारे मध्य मतभेद डाल देगा।

हज़रत बरा बिन आज़िब कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ के मध्य में दाखिल हो कर एक छोर से दूसरी छोर तक जाकर लौट आते थे और हमारे सीनों और कंधों पर हाथ फेरते थे और फरमाते थे आगे पीछे न रहो यथा तुम में मतभेद पड़ जायेगा और फरमाते थे कि पहली सफ पर अल्लाह तआला और उसके फरिशते रहमत भेजते हैं। (अबूदाऊद)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सफों को सीधा करो और कंधों को बराबर करो और सफों के मध्य जो रिक्त स्थान हो उसको बन्द करो और भाइयों के साथ नरमी करो और शैतान के लिए जगह न दो। और जो सफ को मिलायेगा अल्लाह तआला उसको मिलायेगा और

शेष पृष्ठ..... 8 पर

हज के मुसाफ़िर

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

कितना मुबारक है हज का सफर, जो शख़्स हज का इरादा करता है और उसको मंजूरी मिल जाती है उसके पास पड़ोस और अजीज़ों में सफर से पहले ही चर्चा हो जाती है कि फलां साहब हज को जा रहे हैं, अज़ीज़ व अक़ारिब उससे मिलने आते हैं और वह खुद अपने मिलने वालों और करीबी अज़ीज़ों से मिलता है, उसकी ज़बान पर यही होता है, भाई मेरी गलतियों को मुआॅफ करना और मेरे लिए दुआ करना कि मेरा हज सही तौर पर अदा हो और अल्लाह तआला कबूल फरमाएं। यह बड़ी अच्छी तौफीक़ है। हज ऐसी इबादत है कि अगर वह सही तौर पर नसीब हो जाए यानी हज्जे मबरूर व मक़बूल अदा हो जाए तो हाजी के सारे गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं, लेकिन गुनाह दो तरह के होते हैं एक वह जिनका सिर्फ अल्लाह तआला से तअल्लुक़ होता है उसे हक्कुल्लाह कहते हैं वह तो तौबा से भी मुआॅफ हो जाते हैं और हज्जे मबरूर से भी लेकिन जिन गुनाहों का तअल्लुक बन्दों से होता है, जैसे किसी को मारा, किसी को गाली दी, किसी की ग़ीबत की, किसी का माल ले लिया यह सब हक़्कुल इबदा हैं वह तौबा से भी मुआॅफ नहीं होते जब तक हक वाला यानी जिस को सताया या उसका माल ले लिया है वह मुआॅफ न करदे या अपना बदल न पा जाए मुआफ नहीं होता यह अलग बात है कि हज्जे मबरूर वाले पर जिस का हक़ हो अल्लह तआला उस हक़ वाले को अपने इनआम व इकराम से नवाज़ कर उसको अपना हक मुआफ कर देने पर राज़ी करदे लेकिन चाहिए यह कि हक्कुल इबाद यानी बन्दे के हुकूक़ में या उनका बदल अदा कर दे या मुआफ़ी चाह ले ताकि अल्लाह तआला हज के बाद तमाम गुनाहों से पाक साफ़ फ़रमा दें।

हज ऐसी इबादत है जो उन मालदार मुसलमानों पर फर्ज़ है जो अपने मुतअल्लिक़ीन की जरूरतें पूरी करते हुए हज के मसारिफ़ उठा सकते हों जो आज कल कम से कम डेढ़ लाख है, इतनी रकम कम ही लोग बचा पाते हैं लेकिन हज की तमन्ना ग़रीब से ग़रीब भी करता है उसका सबब यह है कि हर मुसलमान का जो अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लगाव है हज के सफर में उस की चाहत बहुत हद तक पूरी होती है वह इस तरह कि हज के सफर में मदीना तय्यिबा हाजिरी का भी नज़्म होता है। और हज के मुसाफिर नबीये करीम के रौज़ए–अक्दस पर हाजिरी देते हैं और सलात व सलाम पेश करते हैं इसी लिए तो वह ग़रीब होने के बावजूद गुनगुनाता रहता है।

''दिखा दे या इलाही वह मदीना कैसी बस्ती है,
जहां पर रात दिन मौला तेरी रहमत बरसती है।''

बेशक मोमिन सबसे ज़्यादा अल्लाह से महब्बत रखता है "वल्लज़ीन आमनू अशद्दुहुब्बन लिल्लाहि" उसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह महब्बत उसके ईमान की अलामत है "ऐ अल्लाह हम को अपनी महब्बत दे, अपने रसूल की महब्बत दे और अपने तमाम महबूबों की महब्बत दे और ऐसे अमलों की महब्बत दे जिन से तेरी महब्बत मिले आमीन।

हज के मुसाफिर अपेन अहल व अयाल से रुख़्सत हो कर अपनी मस्जिद जाते हैं वहां दो रकअत नमाज़े सफर पढ़ कर लोगों से वदाअ़ लेते हुए वे अल्लाह के ज़िक्र के साथ अपने क़रीबी हज हाउस जाते हैं, नमाज़ की पाबन्दी करते हैं हज हाउस में उनकी ख़िदमत और रहनुमाई के लिए तब्लीगी जमाअत के भाई मिलते हैं कुछ दूसरे अल्लाह वाले खिदमत करने वाले भी मिलते हैं, जो हज के मुसाफिरों को हज व उम्रे से मुतअल्लिक़ ज़रूरी बातें याद दिलाते हैं, आम तौर से शुरुअ़ में मुसाफिरों को मदीना तय्यिबा ले जाया जाता है, हाजी लोग बड़ी खुशी व मुसर्रत के साथ दुरूद व दुआएं पढ़ते हुए मदीना तय्यिबा पहुंचते हैं, वहां मस्जिदे नबवी में हाजिर हो कर दो रकअतें अदा करके रौज़े पर हाजिर हो कर अपनी आँखें ठण्डी करते हैं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 और हज़रत उमर रज़ि0 को सलाम पेश करते हैं यह बा बरकत सिलसिला आठ दिन तक चलता है कितने खुशनसीब हैं वह भाई बहन जो रोज़ाना मस्जिदे नबवी में नमाज़ें पढ़ कर हज़ार गुना सवाब लेते हैं और रोज–ए–नब्वी पर हाजिर हो कर खूब सलात व सलाम पढ़ कर दिल का सुकून पाते हैं जिस रोज़ मदीना तय्यिबा से मक्का मुकर्रमा को रवाना होते हैं तो मदीना तय्यिबा छूटने पर हाजियों के दिल भर आते हैं आंसू टपकने लगते हैं लेकिन बहरहाल यह एक नज़्म है आगे बढ़ना ही है मदीने से कुछ फासले पर जुल हुलैफ़ा मिलता है जिसको बिअरे अली भी कहते हैं यह मदीना की तरफ से मक्का जाने वालों की मीक़ात है। यहां औरतों और मर्दों के लिए अलग अलग नहाने और ज़रूरियात से फारिग़ होने का हुकूमत की तरफ़ से अच्छा इन्तिज़ाम है यहां नहा धोकर सब एहराम बांधते हैं, मर्द दो चादरें पहन लेते हैं। एक लुंगी की तरह बांध लेते हैं एक ऊपर से ओढ़ लेते हैं, औरतें अपने कपड़ों ही में रहती हैं फिर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ कर दिल व ज़बान के साथ कहते हैं, "ऐ अल्लह मैं उम्रे की नीयत करता हूँ उसे मेरे लिए आसान कर दे" फिर मर्द ज़ोर से औरतें आहिसता यह पढ़ते हैं "लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक इन्नल हम्द वन्निअमत लक वल मुल्क ला शरीक लक" अब हाजी एहराम में आ गया। हैज़ व निफास वाली औरतें नहा के या वज़ू करके नापाकी की हालत में ही बग़ैर नमाज़ पढ़े उमरे की नीयत करती हैं। अब मर्द सिले कपड़े नहीं

पहन सकता सर नहीं ढक सकता, बाल व नाखून नहीं काट सकता और दूसरी एहराम की पाबन्दियां एहराम वाले (मर्द और औरतें) सब इसका एहतिमाम करते हैं, अलबत्ता औरतें सर न खोलेंगी लेकिन चहरे पर कपड़ा न डालेंगी अजनबी से चेहरा छुपाने के लिए पंखे वगैरह से आड़ कर लेंगी वह सिले कपड़े पहनेगी, मियां बीवी में तअल्लुक़ात न होंगे बल्कि हंसी मज़ाक़ से भी बचना होगा, तल्बिया खूब पढेंगे मर्द ज़ोर से औरतें आहिस्ता लब्बैक दुआ व दुरूद पढ़ते हुए मक्का मुकर्रमा पहुंचते हैं। हरम हाज़िर होते हैं और मस्जिद में दाखिल होने की दुआ पढ़ कर हरम में दाखिल होते हैं। काबे को देख कर बेखुद हो कर खूब दुआएं करते हैं, तवाफ व सई का तरीका पहले से सीख चुके हैं अब जानने वालों को देख कर उनके साथ तवाफ करते हुए खूब दुआएं करते हैं फिर दो रकअत तवाफ़ की अदा करके ज़मज़म पी कर सफा पहाड़ी पर आकर दुआवों के साथ सई पूरी करते हैं। अब मर्द बाल कटा या मुंडा कर और औरतें अपनी चोटी से एक अंगुल बाल काट कर एहराम से बाहर आ जाते हैं हैज़ व निफ़ास वाली औरतें पाक होने के बाद ही तवाफ़ व सई करेंगी। अब अपनी कियाम गाह पर रहते हुए रोज़ाना हरम में हाज़िरी देकर खूब तवाफों का सवाब लेते हैं बूढ़े लोग काबे शरीफ़ को देख कर ही सवाब लेते हैं।

8 ज़िलहिज्ज की सुबह को फिर पहले की तरह हज का एहराम बांधते हैं और मिना जाते हैं खूब लब्बैक पढ़ते हैं। 9 जिलहिज्ज को मिना से अरफ़ात जाते हैं 9 को अरफ़ात जाये बिना हज नहीं होता। पूरा दिन दुआओं में गुज़ारते हैं मग़रिब का वक्त हो जाने पर मगरिब पढ़े बिना मुज़दलफा आते हैं यहां मगरिब व इशा एक साथ पढ़ते हैं और रात दुआ व इबादत में गुज़ारते हैं। सुबह फज्र पढ़ कर थोड़ा रुक कर मिनाआ कर बड़े शैतान जमरतुल अकबा को कंकरीयां मारते हैं। कमज़ोर लोग अपनी तरफ से किसी को कंकरियां मारने के लिए वकील बना देते हैं। बड़े शैतान को कंकरियां मारने से पहले ही लब्बैक कहना खत्म हो जाता है। अब कुर्बानी करते हैं, कुछ लोग कुर्बानी के लिए बैंक में पैसा जमा करते हैं कुछ लोग खुद वहां की तंज़ीमों के ज़रिए कुर्बानी करवाते हैं। हैज़ व निफ़ास वाली औरतें भी यह सारे काम करती हैं सिर्फ नमाज़ें नहीं पढ़ती हैं फिर नहा धो कर तवाफे ज़ियारत केलिए हरम जाते हैं इस तवाफ़ के बिना हज नहीं होता। हैज़ व निफ़ास वाली औरतें पाक हो कर ही तवाफ़े ज़ियारत करती हैं 11,12 जिलहिज्ज को मिना में रुक कर तीनों शैतानों (जमरात) को कंकरियां मारते हैं। 12 की शाम को मिना छोड़ देते हैं, हज पूरा हो गया। अब जब तक मक्का में ठहरना होता है रोज़ाना तवाफ का सवाब लेते हैं फिर इन्तिजामिया के तहत वदाई तवाफ करके ज़मज़म और खजूर के तुहफ़े के साथ अपने मुल्क आते हैं,

लोगों के लिए खूब दुआएं करते हैं, दावतें खाते खिलाते हैं।

आखिर में बहुत से हाजियों को सीधे जद्दा ले जाया जाता है, वह अपने हवाई अड्डे ही पर एहराम बांध लेते हैं और फिर मक्का मुकर्रमा पहुंच कर वह भी पहले उमरा करते हैं फिर हज करते हैं। हज के बाद उनको मदीना तय्यिबा की ज़ियारत कराई जाती है। आम तौर से हमारे मुल्क़ के लोग तमत्तुअ हज करते हैं इसलिए यहां उसी का बयान हुआ। अल्लाह तआला सारे हाजियों का हज़ क़बूल फ़रमाए।

❑❑ आमीन।

अनुरोध

लेखक जनों से अनुरोध है कि वह पन्ने के एक ओर, स्पष्ट तथा सरल लिखें। पाठकों से अनुरोध है कि वह 'सच्चा राही' के बारे में हमको अपनी राय भेजें।

आपके प्रश्न मिलने पर हम दो माह बाद ही उत्तर दे पायेंगे। (सम्पादक)

प्यारे नबी की प्यारी बातें.....

जो सफों को तोड़ेगा अल्लाह तआला उसको तोड़ेगा।

(अबूदाऊद)

हज़रत अनस रज़ि0 कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अपनी सफों को बराबर रखे और आपस में खूब मिल कर खड़े हो (अर्थात दो सफों में इतना अंतर न रहे कि एक सफ उनमें खड़ी हो सके) और गलों को बराबर रखो (अर्थात ऊँची नीची जगह न हो) कसम है उस की जिसके कब्ज़े में मेरी जान है, मैं देखता हूँ कि सफों के खला (खाली जगह) में शैतान दाखिल होता है मानो बकरी के काले बच्चे हैं।

(अबू दाऊद)

हज़रत अनस रज़ि0 कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया पहली सफ को पूरा करो, फिर जो कमी हो वह अंतिम सफ में हो।

(अबू दाऊद)

दाहिनी सफ की फ़ज़ीलत-

हज़रत आयशा रिज़0 कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला और उसके फरिशते दाहिनी सफों पर रहमत भेजते हैं। (अबूदाऊद)

हज़रत बरा इब्न आज़िब रज़ि0 कहते हैं कि जब हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज़ के लिए खड़े होते थे तो चाहत यह होती थी कि हम आपके दाईं तरफ खड़े हों ताकि आप हमारी तरफ मूंह करें, तो मैंने आप को यह कहत हुए सुना है ऐ रब मुझे उस दिन में दण्ड से बचा ले जिस दिन तू अपने बन्दों को उठायेगा या इकट्ठा करेगा (मुस्लिम)

इमाम के मध्य में रहना चाहिए-

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया इमार्म को अपने मध्य में करो (अर्थात दोनों तरफ आदमी बराबर हों) और शिगाफों (दरार) को बन्द करो। (अबूदाऊद)

❖❖❖

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद शबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

शासक वर्ग को दावते इस्लाम-

सुलह होने के बाद स्वाभाविक तौर पर आपस में सम्पर्क और सम्बन्ध की वजह से दावत के काम में सहूलत पैदा हुई और इस्लाम को समझने के अवसर उपलब्ध हुए और इस्लाम की बढ़ती हुई ताकत और गलबे के असर से उसकी अहमियत का अंदाज़ा आम होने और लोगों में उसको जानने का ख़्याल बढ़ा और कुरैश से सुलह हो जाने की सूरत में अमन की जो फ़िज़ा कायम हुई, उससे फायदा उठाते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तबलीग़—ए—हक़ के काम को बढ़ाया और आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूर दूर तक पैग़ाम—ए—हक़ पहुंचाने में आसानी हालिस हुई और आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कमज़ोर तबके से लेकर ताक़तवर तबके तक अरब के सरदारों व सुल्तानों से लेकर अजम के बादशाहों और उनकी क़ौमों को भी दावते हक़ पहुंचायी जहां खुद नहीं जा सके वहां अपने नुमाईंदे भेजे जिन्होंने उनके रुतबे और मन्सब का ख़्याल करते हुए दावते हक़ कुबूल करने और इस्लाम के साए तले आने की दावत दी। आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपेन कुर्ब व जवार के क्षेत्रीय शासकों को दावते हक़ के खतूत भी लिखे, कि वह हक़ कुबूल करें और पैग़ामे खुदावंदी को मानते हुए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रहबरी में आ जाऐं और सच्चे दीन को प्रचलित करें और वह इस तरह दुनिया की कामयाबी के साथ आखिरत की भी कामयाबी हासिल कर सकें।

चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सन् 6 हिजरी के आख़िर या सन् 7 हिजरी के शुरु में विभिन्न क्षेत्रों के बादशाहों को जो मकतूब (पत्र) लिखे उन्हें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नियुक्त किये हुए संदेशवाहक लेकर रवाना हुए, लोगों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि बादशाहों को जो खत भेजे जाते हैं उन पर मुहर भी होती है लिहाज़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी मुहर भी बनवाई, जिसमें अपने नामे मुबारक को कुन्दा (अंकित) कराया, उसमें नामे मुबारक "मुहम्मद" नीचे, उसके ऊपर "रसूल" उसके ऊपर "अल्लाह" कुन्दा कराया और खुतूत रवाना फरमाये। एक खत शाहे हबशा को भेजा जो हज़रत अम्र बिन उगय्या ज़मरी लेकर गए, एक ख़त शाहे रोम को भजा, जिनका निवास स्थान शाम था, यह खत हज़रत दहया बिन ख़लीफा कलबी लेकर गए, तीसरा शाहे ईरान को भेजा जिसको हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा सहमी लेकर गए,

चौथे शाहे असकन्दरया मक़ूकस मिस्र को भेजा, जिसको हज़रत हातिब बिन बलतअ़ लेकर गए, पांचवां ख़ात ग़स्सानी बादशाह हारिस बिन शिमर के पास भेजा, जिसको हज़रत शुजा बिन वहब असदी लेकर गए, छठा ख़त मुबारक शाहे यमामा को भेजा, जिसे हज़रत सलीत बिन उमर बिन अबदे शम्स लेकर गए[1]।

इन बादशाहों और सरदारों में हबशा के बादशाह (नजाशी) और कैसरे रोम हिरक्ल ने तो दावते हक़ पर ध्यान दिया और मुबारक ख़त की इज्ज़त की और संदेशवाहकों को सम्मान दिया। ईरान के बादशाह किसरा ने अनुचित बरताव किया और ख़त को फाड़ दिया, और सिर्फ इसी पर बस नहीं किया बल्कि अपने गर्वनर, जो यमन में था को यह लिखा कि आदमी भेज कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तादीब करे (धमकी दे) लेकिन इस बदतमीज़ी की सज़ा अल्लाह की तरफ से उसको मिली कि ख़ुद उसके बेटे ने ही इन्किलाब (क्रान्ति) करके उसकी हुकूमत छीन ली।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने विदेशी शासकों के अलावा अरब शासकों को अलग से खुतूत रवाना किये और उनका फायदा भी हुआ, उनमें ओमान के बादशहाह के पास हज़रत अमर बिन आस के हाथ नाम–ए–मुबारक भेजा और उसका अच्छा नतीजा निकला और उन्होंने हक़ (सच्चाई) को कुबूल किया। यमन के शासक हारिस अबदे कलाल को हज़रत मुआविया मख़जूमी के हाथ ख़त भेजा उन्होंने फौरन तो नहीं मगर आज्ञा पालन किया, इनके अलावा मआज़ बिन जबल को यमन भेजा ताकि वहां वह हक़ की दावत दें। उनको कामयाबी हासिल हुई। वहां के बाशिन्दों ने हक़ को कुबूल किया, बाद में हज़रत अली को भेजा उनके ज़रिए भी वहां हिदायत फैली। उनके अलावा भी और कई हुक्मरानों को खुतूत रवाना फरमाए। इन पत्रों द्वारा पूर्ण अरब द्वीप बल्कि उसके करीब इलाके के शासकों को दावत दी। इस तरह से दावते हक़ पूरे इलाके में पहुंच गयी जिसका ख़ास फायदा हुआ और वह दावते दीन जिसका प्रारम्भ मक्का मुअ़ज़्ज़मा के सीमित माहौल से हुआ था और मक्के वाले उसके सख़्त मुख़ालिफ हो गए थे और दुश्मनी पर आमादा थे, उसके चारों ओर करीबी इलोकों तक पहुंची थी, वह पूरे प्रदेश में पहुंच गयी। प्रारम्भिक सुबूत सब पर प्रमाणित हो गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो खुतूत लिखे, इतिहास में उनमें से कुछ पत्र सुरक्षित हैं, जिन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन चरित्र लिखने वालों ने अपनी किताबों में दर्ज किया है, नूमूने के तौर पर कुछ मकतूब (पत्र) पेश किये जा रहे हैं[2]।

शाहे हबशा नजाशी के नाम

नाम–ए–मुबारक–

तर्जुमाः "शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बहुत

1. तफ़सील के लिए देखें: अलकामिल फित्तारीख 2/210
2. अलबिदाया वन–निहाया 4/262–277

रहम करने वाला है और रहीम है, अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से नजाशी बादशाह हबशा की ओर इस्लाम क़ुबूल करो, मैं तुम्हारी तरफ खुदा की हम्द भेजता हूँ जिसके अतिरिक्त कोइ माबूद (इबादत के लायक) नहीं वह बादशाह है, पाक है, सारे ऐब से पाक है, अपने रसूलों की तसदीक़ (पुष्टि) करने वाला, अपने बन्दों को क़यामत के मैदान में अमन देने वाला है, उनको बुलन्द दर्जा इनायत करने वाला है, और ग़वाही देता हूं कि ईसा बिन मरयम खुदा की रूह और कलमा हैं, खुदा ने उनको पाक दामन कुंवारी मरयम पर डाला, जिससे वह हामिला हुई, तो खुदा ने हज़रत ईसा अ0 को अपनी रूह और नफख़ (फूँक) से पैदा किया, जिस तरह आदम को अपने हाथ से पैदा किया, और मैं तुमको और तुम्हारे लश्कर को अल्लाह अज़्ज़वजल्ल (सर्वशक्तिमान) की तरफ बुलाता हूँ, मैंने खुदा का हुक्म पहुंचा दिया और नसीहत कर दी। तुम मेरी नसीहत कुबूल करो और सलाम उस पर जो सीधे रास्त पर चले''[1]।

शाहे मिस्र व असकनदरया मक़ोक़स के नाम नाम-ए-मुबारक-

''बिसमिल्लाहिर्रहमा-निर्रहीम, मुहम्मद की तरफ़ से जो खुदा का बन्दा और उसका रसूल है, मक़ोक़स की तरफ जो क़ौमे किब्त का बड़ा है। सलाम उस पर जो सीधे रास्ते की पैरवी करे, इसके बाद मैं तुमको इस्लाम के कलमे की तरफ़ बुलाता हूँ, इस्लाम कुबूल करो, सलामत रहोगे, इस्लाम कुबूल करो खुदा तुमको दोहरा सवाब देगा और अगर तुमने मुंह फेरा तो सारे अहले किब्त का गुनाह तुम पर होगा और ऐ अहले किताब इस बात की तरफ आओ जो हमारे तुम्हारे दरमियान मुत्तफ़क अलैकि (सर्वमान) है कि खुदा के अलावा और किसी की इबादत न करें, खुदा के साथ किसी को शरीक न करें, हम में से कोई किसी दूसरे को खुदा के सिवा अपना मालिक न बना ले, अगर तुम नहीं मानते तो गवाह रहो कि हम मानते हैं''[2]।

किसरा के नाम ख़त-

''बिसमिल्लाहिर्रहमा-निर्रहीम, मुहम्मद की ओर से किसरा को जो कौमे फ़ारस का बड़ा है, सलाम हो उस पर जो सीधे रास्ते की पैरवी करे और ईमान लाए ख़ुदा पर और ख़ुदा के रसूल पर, और गवाही दे कि खुदा एक है और उसका कोई शरीक नहीं और मुहम्मद ख़ुदा के बन्दे और उसके रसूल हैं। मैं तुमको भी इस्लाम की तरफ बुलाता हूँ मैं ख़ुदा का भेजा हुआ हूँ सारे इन्सान की तरफ ताकि वह उनको ख़ौफ दिलाए और काफिरों पर हुज्जत कायम हो जाए, इस्लाम कुबूल करो सलामत रहोगे और अगर तुमने इन्कार किया तो सारी क़ौमे मजूस का वबाल तुम पर होगा।

---

1. तारीख तबरी 3/652, जादुल मआद 3/689
2. जादुल मआद 3/691

❖❖❖

—देवनागरी लिपि में उर्दू

मारक-ए-ईमान व माद्दीयत (ईमान और भौतिकता की लड़ाई)

—मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 —लिपिः मो0 मुहम्मदुल हसनी रह0

सूर-ए-कहफ़ के चार किस्से–

यह सूरह चार किस्सों पर मुशतमिल है, जो उसके संगमेल या सुतून कहे जा सकते हैं जिन के गिर्द उसकी सारी तालीम व मौइज़त (नसीहत) और दानिश व हिकमत गरदिश कर रही है।

1. अस्हाबे कहफ का किस्सा
2. दो बाग़ वाले का किस्सा
3. हजरत मूसा अ0 व खिज़्र अ0 का किस्सा
4. ज़ुल करनैन का किस्सा।

यह किस्से जो अपने उस्लूबे बयान (शैली) और सियाक़ व सिबाक़ (आगे पीछे) के लिहाज़ से जुदा हैं मगर मक्सद और रूह़ के लिहाज़ से एक हैं, और इस रूह ने उनको मानवी तौर पर एक दूसरे के साथ मरबूत और एक लड़ी में मुन्सलिक कर दिया है।

क़ायनात के दो नज़रिये (दृष्टिकोण)–

यह कायनात (आम हालात में) तबई अस्बाब व मुहर्रिकात की ताबे है और यह अस्बाब उसमें अपना काम कर रहे हैं यह वह कायनाती ताकतें हैं जो उसके निज़ाम पर हावी और उसके अन्दर जारी व सारी हैं। यह अस्बाब और ख़वासे अश्या कभी शाज़ व नादिर ही अपनी खासीयत व तासीर छोड़ते हैं या उनका निशाना ग़लत होता है अब लोगों की एक तादाद वह है जिनकी निगाह उन ज़ाहिरी और क़ुदरती अस्बाब से पीछे नहीं गई बल्कि इसी जिन्दगी और माद्दी और महसमस दुनिया में अटक कर रह गई वह समझने लगे कि नताइज हमेशा अस्बाब ही से वजूद में आ सकते हैं और अस्बाब के बगैर नताइज का तसव्वुर ना मुमकिन है, और पूरी कायनात में कोई ऐसी ताक़त नहीं जो अस्बाब व नताइज के दरमियान हाइल हो सके और अपने आज़ादाना इरादे के साथ उनमें कोई तबदीली कर सके और बग़ैर अस्बाब के नतीजे को वजूद में ला सके और उनको बिला किसी मदद और सहारे के पैदा कर सके, उसका नतीजा यह हुआ कि यह गिरोह उन अस्बाबे जाहिरी में फंस कर रह गया और उनके साथ ख़ुदा सा मुआमला करना शुरु कर दिया। अश्या की खसीयतों और अस्बाब व वसाइल के सिवा उसने हर चीज़ से इन्कार किया उसने उस क़ूवत का इन्कार किया जो इस कायनात की बिला शिरकते ग़ैरे मालिक व हाकिम है और उसका हुक्म सारी दुनिया पर नाफिज़ है। इस ज़िन्दगी के बाद दूसरी जिन्दगी और हश्र व नश्र का भी उसने इन्कार किया और अपनी सारी क़ूवत व सलाहियत कायनात की उन तबई ताक़तों की तसख़ीर, अस्बाब व सवाल की दरयाफ्त, और माद्दी वसाइल के इस्तेमाल

में सर्फ कर दी और उसकी फिक्र और आरजू और तलाश व जुस्तुजू में सरगरदाँ रहा, यहाँ तक की उन चीज़ों की अज़मत और महब्बत उसके रग व रेशे में पैवस्त हो गई और उसको उसने अपना रब और अपना माबूद बना लिया माद्दा और कूव्वत के सिवा वह हर चीज़ का मुनकिर हो गया, जब मक्सद की तक्मील उसको आँखों से नज़र आने लगी और उसने बाज़ चीज़ों को अपने इरादे के ताबे कर लिया और अपने तसर्रुफ व इस्तेमाल में ले आया तो उसने कभी ज़बाने हाल से कभी ज़बान काल से अपनी उलूहीयत व रुबूबीयत का भी एलान करना शुरु किया। अपने जैसे इन्सान को अपना बन्दा और गुलाम बनाया, उनके खून, माल और इज़्जत व आबू के साथ जिस तरह चाहा खेल खेला, और अपने अग़राज़ व ख़्वाहिशाते नफ़्सानी और अपने सर बुलन्दी व नामवरी के लिए या अपनी कौम की अज़मत के नाम पर, वतन के नाम पर और पार्टी के नाम पर उन मज़लूम इन्सानों के साथ जो चाहा सुलूक किया।

इस कायनात का दूसरा नजरिया (दृष्टिकोंण) पहले नज़रिये से बुन्याद और तरीक़–ए–कार हर चीज़ में मुख़्तलिफ है। यह नजरिया इस यक़ीन पर काइम है कि इन तबई अस्बाब, कुदरती ताकतों और ख़जानों और अश्या की ख़सियतों से मावरा (उस पार) और बाला तर एक ग़ैबी कूवत है जिसके हाथ में इन अस्बाब की लगाम है और जिस तरह नताइज अस्बाब के ताबे हैं उसी तरह खुद यह अस्बाब अल्लाह तआला के इरादे और हुक्म के ताबे है। अल्लाह का इरादा उनको अदम से वजूद में लाता है। उनको और बढ़ाता और चलाता है, और जब चाहता है उनको अस्बाब से अलग कर देता है इस लिए कि अस्बाब व मुसब्बबात दोनों यक्साँ तरीके पर उसके ताबे व फरमां बरदार हैं जो खुद मुसब्बिबुल अस्बाब (अस्बाब का पैदा करने वाला) है। अस्बाब का सारा सिलसिला उसी की ज़ात पर जाकर खत्म होता है।

क़ायनात को पैदा करने और अस्बाब को वजूद में लाने के बाद कायनात की लगाम एक लमहे के लिए भी उसके हाथ से नहीं छूटी, और सिलसिल–ए–अस्बाब उसकी गुलामी से एक लमहे के लए आज़ाद नहीं हुआ। न उसने उससे सरताबी की, न कभी उसके खिलाफ कभी अलमे बगावत बुलन्द किया, आसमान व ज़मीन की कोई चीज़ उसको आजिज़ करने पर कादिर नहीं, उसी ने अपनी हिकमत और इरादों से अश्या को खवास से और मुसब्बात को अस्बाब से और मुक़द्दरात को अस्बाब से और मुक़द्दरात को नताइज से वाबस्ता किया वही जोड़ने वाला और तोड़ने वाला है, मिटाने वाला और बनाने वाला है और वही तमाम चीज़ों को अदम से वजूद में लाता और लिबासे हस्ती पहनाता है (जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो बस उसका मामूल तो यह है कि उस चीज़ को कह देता है कि हो जा बस वह हो जाती है)

अनुवाद सूर–ए–यासीनः 82)

शेष पृष्ठ..... 38 पर

इस्लाम की ग़ुर्बत

—हिन्दीः ज़माल अहमद नदवी —मौलानाः मुजीबुल्लाह नदवी रह0

हदीस शरीफ में आया है कि इस्लाम गुर्बत की हालत में शुरु हुआ है और फिर एक ज़माना आयेगा जब वह वैसा ही जायेगा तो जो लोग उसकी गुर्बत दूर करने की कोशिश करें वह लाएक़े सताइश (तारीफ) और लाएक़े बशारत हैं। (मुस्लिम)

यही वह लोग हैं जो दीन की खातिर अपने घर बार और खानदान को खैरबाद कह दें।

इन इरशादाते नबवी सल्ल0 की रौशनी में यह बात वाज़ेह हो जाती है कि जब हक़ की आवाज़ बिल्कुल अजनबी और गैर मानूस हो जाए, दीने फितरत का एहसास लोगों के दिलों से निकलने और उनमें फसाद और बिगाड़ पैदा करने लगे, खुदा की किताब और रसूल सल्ल0 की सुन्नत से जब दूरी पैदा हो जाए, फिज़ा और माहोल इतना बिगड़ जाए कि उसमें रहते हुए आदमी के लिए दीन पर अमल करना दुशवार हो जाए, ऐसी हालत में अहले जुरअत अपने दीन को बचाते हुए इस्लाहे उम्मत, इक़ामते दीन और इहयाए सुन्नत का काम करते हैं, जो मरदाने खुदा ऐसे नाजुक हालात में दुनिया को हक़ की तरफ बुलाने और बातिल से दूरे रखने की कोशिश करते हैं वही लोग गुर्बा के मुबारक नाम से याद किये गये हैं, और हुजूरे अनवर सल्ल0 ने इन्हीं को बशारत और खुशखबरी दी है आप सल्ल0 के इन इरशादात से यही नहीं कि गरीब और गुर्बा की पूरी तशरीह हो जाती है बल्कि मुजमलन यह बात भी वाजेह हो जाती है कि इस्लाम की गुर्बत को दूर करने की जो लोग कोशिश करेंगे उनको क्या—क्या मराहिल पेश आ सकते हैं और उन्हें किन किन दुशवार गुज़ार घाटियों को तै करना होगा? आम फितना व फसाद और मुआशरे के आमबिगाड़ के वक्त आदमी का अपने दीन को बचा ले जाना भी बड़ा काम होता है। और हदीस में इसकी इजाज़त आई है लेकिन बहरहाल यह रुख़सत का पहलू है अज़ीमत यही है कि हक़ की जो दौलत उसे फजले एजदी से मिली है उसको अपने ही तक महदूद रखने के बजाए दूसरों में भी तक़सीम करे, उसको छुपाने के बजाए ज़िन्दगी के मैदान में आकर उसकी दावत दे, दीन की जो रौशनी उसके हाथ आई है उससे अपनी ही आँखें रौशन न करे, बल्कि जो लोग बातिल के घटाटोप अंधेरे में परेशान व सरगरदां हैं उनके हाथों तक भी यह रौशनी पहुंचाये, नबीय करीम सल्ल0 ने ऐसे लोगों के मुतअल्लिक़ इरशाद फरमाया है कि इनको 100 शहीदों के बराबर अजर मिलेगा, और यही लोग हैं जिनके मुतअल्लिक़ आप सल्ल0

ने इरशाद फरमाया है कि मेरी उम्मत में हमेशा कुछ ऐसे लाग मौजूद रहेंगे जो हक़ को गालिब करने क़े लिए जद्दोजहद करते रहेंगे, उनको इस बात की परवाह न होगी कि किसने उनको छोड़ दिया और कौन उनकी मुख़ालफत कर रहा है, यह गिरोह क़यामत तक अपना काम करता रहेगा।

यही कारे अज़ीमत है जिसे अंजाम देने के लिए अंबिया अलैहिमुस्सलाम की बेअ़सत हुई है चुनांचे अंबिया के मक़सदे बेअ़सत और फराइज़े नुबुव्वत के सिलसिले में कुर्आन ने खुले अलफाज़ में यह एलान किया है कि दीन को कायम करो, यहां खुदाए कुद्दूस ने हुक्म जिस बात का दिया है वह यह नहीं है कि दीन पर कायम रहो बल्कि यह है कि दीन को क़ायम करो।

हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ि0 के दौरे खैरुल्कुरून में भी इस तरह के बाज सादे मिज़ाज और रुखसत पसंद दीनदार पैदा हो गये थे जिन के दिलों में यह ख़्याल पर्वरिश पाने लगा था कि आदमी पर असल ज़िम्मेदारी उसके इंफिरादी इस्लाह व तक़्वे की है, इजतिमाई ताक़ज़े यानी दावत व इस्लाह। अम्र बिलमारूफ वन्नहीअनिल मुन्कर की अदम–ए–पाबंदी उसकी दीनदारी में कोई खलल नहीं डालेगी, वह खुद अच्छे हैं तो दुनिया बरी हुआ करे उन्होंने अपने ख़्यालात के जवाज़ के लिए कुर्आन करीम की इस आयत को अपने इस्तिदलाल का सहारा बना लिया था। "तुम अगर हिदायत पर हो तो किसी का गुमराह होना तुम्हारे लिए नुक़सानदेह नहीं है"।

लेकिन जब हजरत सिद्दीक़ अकबर रज़ि0 का इस गलत ज़ेहनियत का इल्म हुआ तो आपने लागों को जमा किया और तक़रीर करके इस खाम ख़्याली की तरदीद की, आप रज़ि0 ने फरमाया "ऐ लोगो तुम आयत अनुवादः ऐ ईमान वालो अपनी फिक्र करो जब तुम राह पर चल रहे हो तो जो शख़्स गुमराह रहे तो उससे तुम्हारा कोई नुक़्सान नही (15:105) पढ़ते हो) और उसे जाहिरी अल्फाज़ से गलत फायदा उठाते हो हालांकि इस आयत का मफहूम वह नहीं है जो तुम समझते हो) मैंने रसूल सल्ल0 को यह फरमाते हुए सुना है कि जब लोग बुराई देख कर उससे एराज बरतें और उसे दूर करने की कोशिश न करें तो क़रीब होता है कि अल्लाह तआला सब को अपेन अज़ाब की गिरफ्त में लेले।

एक दूसरी रेवायत में यह अल्फाज़ हैं "जब लोग ज़ालिम को जुल्म करते हुए देखें और उसका हाथ न पकड़ें तो क़रीब है कि अल्लाह तआला उन पर अजाब भेज दे"।

अंबिया किराम अलैहि–मुस्सलाम की सीरतों पर नज़र ड़ालें तो आपको साफ नज़र आयेगा कि जब भी उन्होंने लोगों को हक की तरफ बुलाया है, जब भी उन्होंने खुदा और बन्दे के टूटे हुए रिश्तों को जोड़ने की कोशिश की है तो इबतदा में उनकी

आवाज़ पर लब्बैल कहने वाले और उनकी दावत को कूबूल करने वाले बहुत कम बल्कि बसा औक़ात एक दो भी नहीं हुए हैं। फिर यही नहीं किया गया बल्कि उस दावत के नतीजे में उनको हर किस्म की मुसीबतें और तकलीफें बरदाश्त करनी पड़ीं, उनमें से बाजों को अपने अहल व अ़याल से अलग होना पड़ा, बाजों को घरबार से दस्तबरदार होना पड़ा और कितनों की अपनी जान की बाज़ी लगानी पड़ी, गौर करने की बात है कि दावते हक देने से पहले जो लाग उनके हमदर्द व हमनवा थे वह यका यक उनके दुशमन क्यों हो गये। कल तक जा बीवी का, शौहर का, बाप का, बेटे का, और भाई का, सा रिशता रखते थे आज वह उनके खून के प्यासे क्यों हो गये। कल तक जो उनके अखलाक़ के मद्दाह थे आज उनकी बुराई क्यों करते फिर रहे हैं, कल तक बस्ती और खानदान का हर शख़्स उनसे मिलने जुलने और उनके साथ उठने बैठने को बाइसे फख्र समझता था आज वह नुफूसअ कुदसी अजनबी और गरीबुद्दयार क्यों बना दिये गये हैं। इसकी वजह इसके सिवा और कुछ नहीं कि वह जिस चीज़ की तरफ उनको बुला रहे थे उनके लिए वह गैर मानूस और नई चीज़ मालूम होती थी वह चूंकि अपने अन्दर कोई तबदीली पैदा करना नहीं चाहते थे या उसकी ज़रूरत नहीं समझते थे इसलिए किसी तबदीली या इंकिलाब की दावत उनके लिए बिल्कुल तअज्जुब खेज़ और मज़हका अंगेज़ थी।

❖❖❖

देश में समप्रदायिक दंगे तथा रक्तपात

देश में समप्रदायिक दंगों तथा रक्तपात से दुखी होकर हमारे धर्म गुरू हज़रत मौलाना अली मियाँ रहमतुल्लाहि अलैहि ने "मानवता सन्देश" आन्दोलन 1974 ई0 में संचालित किया था जिसमें हिन्दू मुसलमान दोनों ने भाग ले कर आदर्श शान्ति का उदाहरण प्रस्तुत किया था। यह संगठन आज भी कार्य रत है इसके विषय में अधिक जानकारी तथा उससे सम्बन्धित उर्दू, हिन्दी और अंग्रेज़ी लिट्रेचर की प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें: -

-: मानवता का संदेश आफिस :-

पोस्ट बाक्स नं0 93 नदवतुल उलमा, लखनऊ-226007

कोई न आया मगर रहमते आलम बन कर

—अनुवादः हाशमा अन्सारी

—मौलाना ख़ालिद ग़ाज़ीपुरी

हज़रत इमरान बिन हुसैन फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊँटनी अज्बा असलाह बनू अकील के एक आदमी की थी जिसे मुसलमानों ने कैद करके उससे उस की ऊँटनी छीन ली थी वह रस्सीयों से बन्धा हुआ था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उधर से गुजर हुआ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गधे पर सवार थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शरीर पर एक चादर पड़ी हुयी थी। उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पुकार कर कहा, ऐ मुहम्मद मुझे किस जुर्म में कैद किया गया है, और सफ़रे हज़ में प्रयोग होने वाली उस ऊँटनी को आप लोगों ने क्यों पकड़ा है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम्हारे हलीफ और इतहादी क़बीला बनू शकीफ की एक बड़ी गल्ती की वजह से हमने तुम्हें पकड़ा है। रावी कहते हैं कि बनू शकीफ ने अल्लाह तआ़ला के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दो सहाबियों को गिरफ्तार कर लिया था, उस व्यक्ति ने चर्चा में अपनी रिहाई की कोशिश की, कि मैं मुसलमान हूँ लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अगर तुम गिरफ्तार होने से पहले इस का इजहार करते तो बच जाते, लेकिन अब वक्त निकल चुका है, हम फिदया के बगैर तुम्हें आज़ाद नहीं करेंगे, इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे बढ़ने लगे तो उसने कहा ऐ मुहम्मद! मैं भूखा प्यासा हूँ कुछ खाने पीने को दे दीजिए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हाँ तुम्हारी यह बात मानने योग्य है। फिर उन मुसलमानों को आज़ाद कर दिया गया। लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अज्बा को अपनी सवारी के लिए अपने पास रख लिया, फिर एक रोज़ कुफ्फार मदीना के मवेशियों पर हमला करके उन्हें ले गये। जिनमें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊँटनी अज्बा भी थी, वह लोग एक मुसलमान औरत को भी अपने साथ कैद करके ले गये वह जब कहीं पड़ाव करते तो ऊँटों को अपने करीब ही बांधते थे एक रात जब सब सो गये तो वह औरत चुपके से उठ कर ऊँटों की तरफ चल दी, वह जब भी किसी ऊँट के पास पहुंचती वह चिल्लाना शुरु कर देता लेकिन जब वह अज्बा के पास पहुंची तो वह बिल्कुल ख़ामोश खड़ी रही, यह देख कर वह औरत उस पर सवार हुई और उसे मदीने की तरफ

हाक दिया और यह नज़र मानी की अगर अल्लाह तआ़ला ने उसे उन जालिमों से बचा लिया तो वह अल्लाह के लिए इस ऊँटनी को ज़बह कर देगी।

जब वह मदीना पहुंची तो लोगों ने उसे बताया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपनी नज़र का बयान करो तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस की बात सुन कर फरमाया। वाह तुम ने भी उसे खूब बदला दिया, अल्लाह तआला ने इस के जरिए तुम्हें बचाया और तुम हो कि इसे मार ही देना चाहती हो, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "ना गुनाह के काम के लिए मानी गयी नज़र पूरी करना ज़रूरी है, और न किसी दूसरे के माल को लेकर मानी गयी मन्नत पूरी करना ज़रूरी है।"

फायदा– इससे हमे यह फायदा मिलता हे कि कैदियों के साथ नर्मी और नम्रता पूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत ही दयालु हृदय के थे बल्कि एक कैदी के कठोर शब्दों में पुकारे जाने पर भी क्रोध का इज़हार नहीं फरमाया।

हम जाहिर के जानने वाले हैं, बातिन का हाल अल्लाह जाने।

किसी व्यक्ति को उसके मातहत के जुर्म में पकड़ा जा सकता है।

कैद होने के बाद कबूले इस्लाम गुलामी के मुनाफी नहीं है, यानी अगर किसी काफिर ने कैद में इस्लाम कबूल किया है तो उसे गुलाम रखा जा सकता है, यह अलग बात है कि उसे बतौर एहसान माफ कर दिया जाये।

इस वाकिया से एक मुस्लिम खातून की शजाअत और हुस्न तदबीर का भी ज्ञान होता है।

गुनाह के काम की मन्नत मानी जाये तो पूरी नहीं करनी चाहिए।

दूसरे के माल में नजर मानना जायज़ नहीं है।

इस वाकिया में उन फुकहा के लिए हुज्जत है जो यह कहते हैं कि नज़र मासियत का कफ़्फ़ारा नहीं है।

इस किस्से से यह भी मालूम होता है कि अज़्बा और कस्वा अलग–अलग दो ऊँटनियां थीं, इसलिए कस्वा वह ऊँटनी है जिस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिजरत फरमायी थी। (शरह अलज़रकानी अली अलमवहब)

यह बात मोमिन की शान के खिलाफ है की वह किसी के साथ एहसान के बदले में बदसुलूकी करे, चाहे वह मोहसिन जानवर ही क्यों न हो।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बड़े मेहरबान और नरम दिल थे कि एक ऊँटनी के साथ ना इंसाफी भी गवारह नहीं फरमाई।

❖❖❖

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

संयुक्त नामों का प्रचलन–

नामों के बारे में यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि हिन्दुस्तान में मिश्रित अथवा संयुक्त नामों का अधिक प्रचलन है, यथा—मुहम्मद हुसैन, महमूद हसन, उस्मान अहमद, अली मुर्तज़ा आदि। जब कि अरब देशों में अधिकांश एकहरे अमिश्रित नाम रखे जाते हैं और जो नाम मिश्रित होते हैं, उनमें पहला नाम व्यक्ति विशेष का और दूसरे नाम को पिता का नाम समझा जाता है अथवा पूर्ण नाम का दूसरा अंश वर्ग विशेष अथवा उपनाम होता है। भारत में केवल गुजरात प्रान्त में पुत्र तथा पिता का नाम मिला कर लिया जाता है, इस प्रकार नाम का प्रथम भाग व्यक्ति विशेष का नाम दूसरा भाग पिता का नाम होता है।

हिन्दुस्तानी रूप धारण किये हुए नाम तथा उपनाम–

हिन्दुस्तान में पूर्णरूपेण भारतीय बनावट के नामों का भी प्रचलन है और यह वह नाम हैं जिनमें एक भाग या दोनों भाग उर्दू अथवा फ़ारसी भाषा या स्थानीय बोलियों के होते हैं और इनसे आसानी से पहचाना जा सकता है कि यह हिन्दुस्तानी हैं। यथा– बुनयाद हुसेन, गुलज़ार अली, अल्ला दिया, बरखुरदार, उमरदराज़बेग आदि। अनेक नाम ख़ालिस हिन्दुस्तान की उपज हैं और वह नाम हिन्दुस्तान के बाहर कहीं सुनने में नहीं आये। अनेक नामों के अर्थ तथा उनकी वास्तविकता पता लगाना भी कठिन है, जैसे हुबदार खाँ, उमराओ मिर्ज़ा, अमीर बाज़ खाँ, बाज़ मीर।

यहाँ उपनाम रखने का भी बड़ा रिवाज़ है। कुछ उपनाम इतने प्रसिद्ध हो जाते हैं कि निकट सम्बन्धियों को भी कभी कभी असली नाम का पता नहीं होता। यह साधारणतया लाड़ प्यार के शब्द, या आशीर्वादक वाक्य अथवा बड़े तथा पूरे नामों का संक्षिप्त रूप होते हैं। यथा—नौशा मियाँ, प्यारे मियाँ, बसावन मियां, बन्ने मियां, जी मियां, अथवा नक्कन साहब, कब्बन साहब। इन उपनामों का रिवाज अवध और विशेष कर लखनऊ में बहुत है।

ख़तना की रस्म जो इब्राहीमी सभ्यता का चिन्ह (शेआर) है–

अक़ीक़ा के बाद दूसरी रस्म खतना की है, जो इब्राहीमी सभ्यता का चिन्ह, अरबों की प्रथा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा बताई हुई सुन्नत है। यह कार्य भी सामान्य परिस्थिति में नाई द्वारा सम्पन्न किया जाता है। इस अवसर पर भी परिवार के लोग तथा सगे सम्बन्धी एकत्र होते हैं और अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हैं।

बिस्मिल्लाह ख़्वानी की रस्म और उसका तरीक़ा–

आम तौर पर रिवाज है कि बच्चा जब बोलने और बात करने योग्य हो जाता है तो किसी पढ़े लिखे पूणय व्यक्ति द्वारा उसकी बिस्मिल्लाह कराई जाती है। और उसको पढ़ने बैठा दिया जाता है। शिष्ट एवं खाते पीते घरानों में यह रस्म सुव्यवस्थित रूप से अदा की जाती है और इसको "तसमिया ख्वानी" या "मकतब नशीनी" की संज्ञा दी जाती है। बहुत से स्थानों तथा परिवारों में यह रस्म उस समय अदा की जाती है जब बच्चा चार वष।, चार मास तथा चार दिन का होता है। इस संख्यात्मक विशेषता का स्रोत कहां से है और इसका आधार क्या है, यह हमको ज्ञात नहीं, हाँ इतना ज्ञात है कि इसका कोई धार्मिक आधार नहीं है। इस अवसर पर बिस्मिल्लाह कराने वाला "बिस्मिस्लाहिर्रहमा–निर्रहीम (अर्थ मैं आरम्भ करता हूँ अल्लाह के राम से जो अत्यन्त कृपाशील, दयावान है) का उच्चारण बच्चे द्वारा करवाता है, फिर इस बात की दुआ करते हुए (ईश्वर से प्रार्थना करते हुए) कि विद्या इसके लिए सरल हो और इसका परिणाम अच्छा निकले, उसको "क़ायदा बुग़दादी" की एक दो पंक्तियां अक्षरों पर उंगली रखवा कर पढ़वाता है। इसको इस प्रकार भी कहते हैं कि अमुक बच्चे की "बिस्मिल्लाह" हो गई। सामान्य रूप से क्षमतानुसार मिठाई बाँटी जाती है अथवा उपस्थित व्यक्तियों का यथोचित सत्कार किया जाता है और सब उस बच्चे के चिरंजीवी तथा भाग्यशाली होने की प्रार्थना करते हैं। उनके अभिभावक प्रसन्न एवं अपने को भाग्यवान समझते हैं कि उनका पुत्र शिक्षा ग्रहण करने योग्य हो गया।

कुरआन मजीद की शिक्षा का शुभारम्भ–

इस 'तसमिया ख्वानी' के अतिरिक्त शिक्षा कि सम्बन्ध में दो रस्में और भी प्रचलित हैं जिनकी वर्तमान शिक्षा प्रणाली के प्रभाव के कारण नौबत नहीं आती। एक उस समय जब बच्चे का कुरआन मजीद आरम्भ होता है। उस समय बजाय "क़ायदा बुग़दादी" के उससे सूर–ए–अलक[2] की वह तीन आयतें जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरी थीं, पढ़ाई जाती हैं। सब आयतें इस अवसर के लिए अत्यन्त समयानुकूल और भाव पूर्ण हैं। निम्न इन आयतों का अर्थ लिखा जाता है।

"अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कुपाशील और दया वान् है। (ऐ मुहम्मद) पढ़ो अपने रब का नाम लेकर, जिसने पैदा किया। पैदा किया मनुष्य को एक लोथड़े से, पढ़ो और तुम्हारा "रब" बड़ा उदार है। जिसने क़लम द्वारा ज्ञान दिया। ज्ञान दिया मनुष्य को उस चीज़ का जिसे वह नहीं जानता था।"

(अल–अलक़ 1–5)"

---

1. अरबी अक्षरों का बोध कराने वाली पुस्तिका (अनुवादक)
2. यह सूरह कुरआन मजीद के तीसवें तथा अन्तिम पारे में है, इसको सूरे–ए–इक़रा भी कहते हैं।

❖❖❖

तालीम के जदीद वसाएल और हम (शिक्षा के आधुनिक साधन और हम)

—हिन्दी लिपिः फ़ौज़िया सिद्दीक़ा

—अब्दुल अज़ीम मुअ़ल्लिम नदवी

आज इस इक्कीसवीं सदी में इन्सान के लिए कोई चीज़ और कोई बात हैरत अंगेज़ नहीं रही, साइंसी ईजादात इस क़दर वुजूद में आचुकी हैं कि मजीद इन्सान किसी नई ईजाद से हैरत ज़दह होने के लिए तैयार नहीं, मसाफतें इस दौर में मअ़ना रखती हैं न वक़्त, किसी ज़माने में जो चीज़ सालों में मुमकिन थी आज वह दिन और घण्टों में मुकम्मल हो जाती है, साइन्स की इन नित नई ईजादात से दुनिया का कोई शोअ़बा ख़ाली नहीं, घर हो या दफ़्तर कोई इदारा हो या स्कूल, फैक्ट्री हो या कोई रिसर्च सेन्टर हर जगह उनका दौर–दौरा है। बिला मुबालग़ा दुनिया का हर शख़्स किसी न किसी सूरत में इससे मुस्तफ़ीद हो रहा है।

हुसूले इल्म के लिए आज से कुछ दहाईयों पहले तक जो तसव्वुर था आज बिल्कुल बदल गया है। उस वक़्त किसी भी फ़न या इल्म को हासिल करने के लिए सफ़र लाज़मी था। सफर की मशक़्क़तों को बरदाश्त करके मंज़िल तक पहुंचते। फिर उस्ताद की ख़िदमत में रहकर फ़न या इल्म को हासिल करते, बसा औक़ात इसके हुसूल में इन्सान की आधी ज़िन्दगी गुज़र जाती थी। लेकिन आज के दौर में घर बैठे बिला किसी मशक्कत के हर किस्म के फ़ुनून के बारे में वाक़फियत हासिल हो सकती है। बल्कि फ़ासिलाती तालीम के नये निज़ाम से आदमी सनद याफ़ता आलिम भी बन सकता है। जी हां यह इस दौर के इनकिलाबी ईजादात का नतीजा है जिन में सरे फहरिस्त कम्प्यूटर और इन्टरनेट है। यह दोनों ऐसी हैरत अंगेज़ व इन्क़िलाबी ईजादात हैं जिनके ज़रिए मुख़्तलिफ़ शुअ़बा हाए हयात (जीवन के विभागों) में तअ़मीरी व तख़रीबी (रचनात्मक तथा ध्वंसात्मक) दोनों तरह का काम लिया ज़ा सकता है और लिया जा रहा है।

बहर कैफ़, कम्प्यूटर और इन्टरनेट दोनों का दाइर–ए–कार इन्तिहाई वुसअ़त का हामिल है। इन्सानी दिमाग़ों ने इसकी तरक्क़ी के लिए इतनी मेहनत की है कि शायद एक इन्सान अपनी ज़िन्दगी में मुकम्मल तौर पर इसको समझ सके, और अगर कोई इस का दावा करता है तो यकीनन उसकी यह बात तसलीम नहीं की जाएगी। तालीम के मैदान में इन ईजादात ने बहुतेरी सहूलियात पैदा की हैं। जिनके नतीजे में आज तालीम न सिर्फ बेहतर बल्कि सहल तरीन हो चुकी है, दुनिया भर की मालूमात को

इन्टरनेट के मुख़्तलिफ वेब साइट्स में दाखिल किया गया है और दुनिया के किसी भी कोने में बैठ कर इन्सान इससे फाइदा उठा सकता है। इसी के ज़रिए फासिलाती तालीम और आनलाइन एजूकेशनल सिस्टम कामयाबी के साथ चल रहा है। बाहिसीन (रिसर्च स्कालर) भी अपने मक़ालात की तकमील में इससे भरपूर फ़ाइदा उठा रहे हैं। अलगर्ज़ मुख़्तलिफ़ मक़ासिद के हुसूल के लिए तक़रीबन हर इदारा अपनी अपनी वेव साइट्स बनाये हुए हैं। उनमें लाइबिरेरियां भी शामिल हैं, मदारिस और स्कूल व कालिजेस भी शामिल हैं। मुख़्तलिफ़ मराकिज़ और रिसर्च सेन्टर्स भी शामिल हैं जब कि सर्च इनजन के ज़रिए इन मालूमात तक पहुंचना और उन वेव साइट्स का तलाश करना भी बहुत आसान हो चुका है।

कम्प्युटर और इन्टरनेट की दुनिया का अगर जाइज़ा लिया जाए तो मुसलमानों की कारकर्दगी इस मैदान में एक तरफ़ उम्मीद अफ़ज़ा है, अरब नौजवान न सिर्फ इस लाइन में बहुत आगे बढ़ चुके हैं बल्कि वह अपनी सलाहियात व जदीद ज़राए व ईजादात का इस्तेमाल इस्लाम और दीन की ख़िदमत के लिए कर रहे हैं और हर मुमकिन अपने हुनर से इस्लाम के लिए ढाल बन रहे हैं। दूसरी तरफ उन्हीं अरब नौजवानों का एक बड़ा तबक़ा और इस्लामी मुमालिक हुक्मरान तबके यहूदी साज़िशों को समझे और बग़ैर जाने और अनजाने में कभी अपने मफ़ाद के लिए और कभी नादानी में ऐसे काम कर जाते हैं जो मिल्लते इस्लामिया के लिए बिलकुल मुफ़ीद नहीं बल्कि सरासर नुक़सान देह है। इस्लामी दुनिया से सर्फ़ेनज़र करके अगर सिर्फ हिन्दुस्तान के हालात का जाइज़ा लिया जाये तो इस मैदान में मिल्लते इस्लामिया की नुमाइन्दगी करने वाले बेहद कम और उंगलियों पर गिनी जाने वाली तादाद में नज़र आएंगे। हालांकि कम्प्यूटर साइन्स और जदीद तेक्नालोजी में हिन्दुस्तान बहुत आगे निकल चुका है और नामवर और मुम्ताज़ शख़्सियात में भी शामिल हैं लेकिन उनकी तादाद तसल्ली वख़्श नहीं। उसके जुमला असबाब में बुनियादी सबब खुद हमारी ग़फलत है और सरकार की तरफ से दी जाने वाली मुराआ़त और मुख़्तलिफ इस्कीमों से लाइल्मी और कभी जानने के बावजूद उससे फ़ाइदा न उठाना है। इसलिए मिल्लत के दर्दमन्द अफ़राद को इस जानिब भी ख़ुसूसी तवज्जुह देने की ज़रूरत है। फिर भी अगर इस मैदान में पिछले चन्द सलों में हमारी कोशिशों का जाइज़ा लिया जाये तो पिछली दहाइयों के मुक़ाबले में निहायत उम्मीद अफ़ज़ा है।

इस वक़्त आलमी पैमाने पर आनलाइन लाइब्रेरियां और ई–बुक के साथ साथ तालीमी प्रोग्राम (एजुकेश्नल

साफ्टवेयर) बड़ी तेज़ी से लोगों में मक़बूल होते जा रहे हैं। जिनमें सरे फ़हरिस्त रिसर्च इस्कालर्स हैं जो अपनी रिसर्च की तकमील में इससे फ़ाइदा उठा रहे हैं। दुनिया के मुख़्तलिफ आलमी ज़बानों में इस मैदान में कोशिशें हुई और ऐसे साफ्टवेयर और प्रोग्राम मनज़रे आम पर आये जिनसे इस ज़बान में बोलने वालों के लिए बे इन्तहा सहूलतें पैदा हुई और तालीम के मैदान में उनका मेयार भी तेज़ी से बुलन्द होने लगा। लिहाज़ा उसके लिए मुस्तक़िल कोशिशें की जाने लगीं ताकि तालीमी मेयार को मज़ीद बुलन्द से बुलन्दतर किया जा सके। अरबी ज़बान में भी उसके लिए बेइन्तहा कोशिशें हुई और मुस्तकिल हो रही हैं और फाइदा उठाने वाले इससे खूब फाइदा उठा रहे हैं।

उर्दू ज़बान का जहां तक तअल्लुक़ है हक़ीक़त यह है कि यह ज़बान मैदान में आकर काम करने वालों की मुन्तज़िर है। इस मैदान में सिवाये चन्द डिक्शनरीज़ और इनपेज व उर्दू एडीटर के कोई मुफीद साफ्टवेयर जिसमें अलमकतबतुशशाकिला या जवामिउल कलिम की तरह सहूलियात हों, नज़र नहीं आता। हिन्दुस्तान में जब कि उमूमी तालीमगाहों में तअ़लीम उर्दू में दी जाती है और मदारिस के अलावा स्कूल, कालेज व युनिवर्सिटीज़ के तलबा की भी एक बड़ी तादाद उर्दू में डिग्रियाँ हासिल कर रही हैं ऐसे में उनके लिए मुतनव्वे सहूलियात मुहय्या करने की ज़रूरत है ताकि हमारे नौजवान भी तरक़्की की राह पर गामज़न हो सकें और नाम निहाद तरक़्की याफ़्ता मुमालिक के शाना बशाना चल सकें।

मज़ीद बरआँ कि हमारे तलबा की आ़म मालूमात दूसरे अलफ़ाज़ में जनरल नॉलेज सिर्फ़ किरकेट और कुछ खेलों तक महदूद है। ज़रूरत है कि इस लायानी खेल से तवज्जुह हटा कर उलूम व फुनून और दुनिया में पेश आमदह जदीद मसाइल और हालात की तरफ़ मबजूल करें, देखा यही जा रहा है कि इस मैदान में हमारे तलबा की मालूमात बिलकुल न होने के बराबर है। दीनी व इस्लामी मालूमात दरकिनार अपने वतन की सही तारीख़ और मुस्लिम हुक्मरानों के कारनामों के बारे में भी उन्हें इल्म नहीं होता। वालिदैन अपने बच्चों की महब्बत में बचपन में ही कम्प्यूटर, लेपटाप और मोबाइल वगैरह उनके हाथों में दे देते हैं। उनके बुरे असरात और नताइज से सर्फे नज़र करके अगर सिर्फ़ इल्मी व दीनी हद तक भी आप अपने बच्चों की तरबियत की तरफ़ तवज्जुह देंगे और इन जदीद वसाइल को तालीम के लिए इस्तेमाल कराएंगे तो यक़ीनन आगे चल कर मुल्क व मिल्लत के लिए यह कार आमद साबित होंगे।

❖❖❖

मय्यित के हुक़ूक़

फ़िक़्ह व हदीस की किताबों से माख़ूज़

—इदारा

आख़िरी वक़्त की तलक़ीन-

जब हालात से लगे कि किसी मुसलमान का वक़्त क़रीब है तो मुम्किन हो तो उसको क़िब्ला रुख़ कर दीजिए और उसके पास हल्की आवाज़ से जिसे वह सुन सके कलिमा पढ़िये मगर उससे पढ़ने को न कहिए, उसके पास यासीन शरीफ़ पढ़िए, जब रूह निकल जाए तो दोनों हाथ बराबर में रख दीजिए सीने पर मत रखिये मुंह बन्द कर दीजिए और एक कपड़े से ठोड़ी के नीचे से सर के ऊपर बांध दीजिए ताकि मुंह खुला न रहे। बिस्मिल्लाहि व अला मिल्लति रसूलिल्लाहि कहते हुए आंखे बन्द कर दीजिये दोनों पैरों के अंगूठे मिलाकर बांध दीजिये और ऊपर से चादर डाल दीजिए पास में लोबान या अगर बतियां सुलगा दीजिए।

नहलाना (ग़ुस्ल के वक़्त लोग घेर कर खड़े न हों)-

मय्यित को जिस तख़्ते पर नहलाना हो उसे पाक करके ताक़ बार लोबान या अगरबत्ती की धूनी दे लीजिए, नहलाने की जगह से पानी निकलने या किसी गड्ढे में पानी जमअ करने का इन्तिज़ाम कर लीजिए ताकि उस पानी से नहलाने वालों या दूसरों को तकलीफ़ नहो, तख़्ता सरहाने की तरफ़ ज़रा ऊँचा रखें, मय्यित को तख़्ते पर लिटा कर नाफ़ से घुटने तक पाक कपड़ा डाल कर पहने हुए कपड़े आहिस्ते से उतार लीजिए, फिर बायें हाथ में दस्ताना पहन कर पहले ताक ढेलों से फिर पानी से अच्छी तरह इस्तिंजा कराइये फिर दस्ताना पाक करके या बदल के वुज़ू कराइये, वुज़ू से पहले मुंह धुलाइये, फिर कुहनियों समेत हाथ, फिर सर का मसह, फिर दोनों पैर धोइये, कुल्ली न कराइये न नाक में पानी पहुंचाइये, अलबत्ता पाक रूई से दांत और नाक साफ़ करके मुंह और नाक रूई से बन्ध कर दीजिए ताकि अन्दर पानी न जाय, फिर सर और दाढ़ी बेरी की पत्तियां पड़े नीम गर्म पानी से या साबुन लगाकर नीम गर्म पानी से साफ़ कीजिए, फिर बाईं करवट लिटा कर बेरी की पत्ती पड़ा हल्का गर्म पानी सर से पैर तक ठीक से बहाइये। आहिस्ता मल कर मैल निकाल दीजिए, फिर दाहिनी करवट लिटा कर बेरी की पत्ती पड़ा हल्का गर्म पानी सर से पैर तक ठीक से बहाइये यह दो ग़ुस्ल हो गये अब सर की तरफ़ से मय्यित को ज़रा उठा कर आहिस्ता आहिस्ता पेट मलये और अगर कुछ निकले तो चीथड़े या ढेले से पोछ कर बायें हाथ में दस्ताना पहन कर ठीक से धो दीजिये। कुछ गंदगी निकलने पर वुज़ू और पहले वाले ग़ुस्ल दुहराने की ज़रूरत नहीं, अब मय्यित को बाईं करवट लिटा कर काफ़ूर पड़ा गुनगुना पानी सर से पैर तक

ठीक से बहाइये मय्यित का गुस्ल पूरा हो गया। अगर सफ़ाई न हो सकी हो तो दो गुस्ल और दें।

अगर गर्म पानी, बेरी की पत्ती और काफ़ूर वगैरह का किसी मजबूरी से इन्तिजाम न हो सके तो सादे पानी से इसी तरह गुस्ल दीजिए और अगर कोई मजबूरी हो तो मुर्दे को सिर्फ़ एक बार गुस्ल दे देने से गुस्ल हो जायेगा औरत का गुस्ल भी इसी तरह होगा।

गुस्ल पूरा हो जाने के बाद कोई पाक कपड़ा नाफ़ से घुटनों तक डाल कर गीला कपड़ा अलग कर लीजिए और पाक कपड़े से बदन पोंछ कर कफ़न पहनाइये।

कफ़न-

कफ़न का कपड़ा ज़्यादा मंहगा न हो और सफ़ेद होना बेहतर है। आमतौर से कफ़न छालटीन (लट्ठे) से बनाते हैं जिस की चौड़ाई 80 या 90 सेन्टी मीटर होती है ऐसा कपड़ा मर्द के कफ़न के लिए 16 मीटर और औरत के कफ़न के लिए 19 मीटर होना चाहिए।

1. लिफ़ाफ़ा–

सवा दो मीटर कद छोटा हो तो अन्दाज़े से इतना लें कि सर और पैर दोनों ओर आधा हाथ बांधने के लिए निकला रहे। चौड़ाई अगर कम है तो पट्टी जोड़ कर सवा मीटर कर लीजिए।

2. तहबन्द–

दो मीटर, इसकी चौड़ाई भी सवा मीटर हो कम हो तो पट्टी जोड़ें, लम्बाई सर से पैर तक होना चाहिए छोटा कद हो तो अन्दाज़ा कर के कम कर लें।

3. कुरता–

ढाई मीटर इस को आधा मोड़ लें और मोड़ की तरफ़ सिर डालने के लिए थोड़ा हिस्सा बीच में फ़ाड़ लें। (इसकी दूहरी लम्बाई कन्धों से पिन्डलियों तक हो। यह मर्द का कफ़न हुआ औरत के कफ़न में दो कपड़े और है।

4. ओढ़नी एक मीटर 5. सीना बन्द डेढ़ मीटर

ओढ़नी की चौड़ाई एक हाथ से कुछ ज़्यादा हो।

कफ़न से अलग कपड़े-

1. ऊपर उढ़ाने वाली चादर सवा दो मीटर चौड़ाई कम हो तो पट्टी जोड़ें।

2. नहलाने वाला कपड़ा एक मीटर।

3. नहलाने के बाद कफ़न पर लाने वाला कपड़ा एक मीटर।

4. बदन पोछने वाला कपड़ा आधा मीटर।

5. दो या तीन दस्ताने।

नोटः यह जायद कपड़े पुराने कपड़ों से भी हो सकते हैं।

कफ़न बिछाना–

कफ़न को ताक़ बार लोबान या अगरबत्ती वगैरह से धूनी दे लें फिर पाक चारपाई या जिस पर जनाज़ः ले जाना हो नहलाने की जगह के करीब रख कर कफ़न इस तरह बिछायें:–

पहले बीच वाली पट्टी बिछायें, फिर लिफ़ाफ़ा, फिर तहबन्द, फिर कुरता इस तरह बिछायें कि नीचे वाला हिस्सा बिछा रहे और ऊपर वाला हिस्सा समेट कर सर की तरफ रख दें औरत के कफ़न में लिफ़ाफ़े पर तहबन्द से पहले सीना बन्द इस तरह बिछायें कि बग़ल के नीचे से रानों तक रहे, सीना बन्द पर तहबन्द उस के ऊपर कुरता

जैसे बताया गया बिछा दें।

कफ़नाना–

मय्यित को कफ़न पर लिटा कर कुरते का ऊपर वाला हिस्सा सर से निकाल कर जिस्म पर उढ़ा दीजिए, और जो कपड़ा, गीला कपड़ा हटाने और परदे के लिए डाला था उसे निकाल लीजिए, अब सर और दाढ़ी में इत्र लगाइये, पेशानी हथेलियों और घुटनों और पैरों पर काफूर मलिए, अब जिसको मय्यित की ज़ियारत करना है ज़ियारत कर ले। फिर तहबन्द पहले बाईं तरफ़ से इसी फिर दाहनी तरफ से इसी तरह लिफाफा पहले बाईं तरफ़ से फिर दाहिनी तरफ़ से पलटिए।

औरत के कफ़नाने में इत्र और काफूर लगाकर उसके बालों के दो हिस्से कर के आधे दाहिनी तरफ़ और आधे बाईं तरफ सीने पर कुरते के ऊपर रख दीजिये और दोपट्टा सर से उढ़ा कर आंचल दोनों तरफ़ बालों पर डाल दीजिये अब लोगों को ज़ियारत का मौक़ा दीजिए, नामहरम के लिए औरत मय्यित की ज़ियारत हराम है। और अब पहले की तरह यानी पहले बाईं तरफ़ से फिर दाहिनी तरफ़ से तहबन्द फिर सीना बन्द और आख़िरी में लिफ़ाफ़ा पलट दीजिए, अब बीच की पट्टी बांध दीजिए, और सर के बाहर और पैरों के बाहर भी कपड़ा चुन कर पट्टियां बांध दीजिए।

मर्द के कफ़न में यही तीन कपड़े और औरत के कफ़न में यही पांच कपड़े अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीमात से साबित हैं और फ़िक़्ह की किताबों में लिखे हैं, अगर हम को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात को सब से ऊपर रखना है तो हम अपनी तरफ़ से इससे ज़्यादा क़पड़े न दें।

फिर किसी साफ जगह जनाज़े पर, जनाज़े की नमाज़ पढ़ी जाए।

दफ़नाना–

जनाज़े को क़ब्र में किबला की तरफ़ से बिस्मिल्लाहि व अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाहि (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कह कर उतारें मय्यित अगर औरत हो तो चादर तान कर परदा कर लें, और औ़रत का जनाज़ा उसके महरम उतारें, महरम न हों तो कोई उतारे दूसरे ग़ैर महरमों के मुक़ाबले में शौहर को उतारना चाहिए।

मय्यित को दाहिनी करवट लिटा कर किबला रुख़ कर दें। ज़रूरत हो तो शाने के बराबर पीठ की जानिब मिट्टी का ढेला रख दें और बन्द खोल दें अब लकड़ी या पटरे वग़ैरह रख कर मिट्टी डालें, इत्र और काफूर वगैरह खुशबू लगा चुके हैं अब क़ब्र में क्योड़ा डाल कर कीचड़ न करें कि यह साबित भी नहीं है। बाज़ जगह मिट्टी डालने से पहले पढ़े हुए ढेले रखे जाते हैं। हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी नहीं सिखाया है।

मिट्टी डालते वक़्त पहली बार मिन्हा ख़लक़नाकुम दूसरी बार, व फीहानुअ़ीदुकुम और तीसरी बार, व मिनहा नुख़ुरिजुकुम तारतन उख़रा पढ़ें। क़ब्र ज़्यादा ऊँची न करें बीच का हिस्सा उभरा रखें। क़ब्र बराबर कर के उस

पर पानी छिड़क दें, बाज जगह क़ब्र दुरुस्त करने के बाद उस पर अज़ान कहते हैं। क़ब्र पर अज़ान कहना हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत को नहीं सिखाया लिहाज़ा जिस को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सच्ची मुहब्बत हो और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात सब की बातों पर ऊँची रखना चाहता हो वह क़ब्र पर अज़ान न कहे किसी सहाबी रज़ि0 ने किसी की क़ब्र पर अज़ान नहीं कही।

सवाब पहुंचाना–

दफ़न के बाद क़ब्र पर थोड़ी देर तक ठहर कर कुछ पढ़ कर मय्यित को सवाब बख़्शें और मय्यित के लिए मग़फिरत की दुआ करें।

फिर घर आकर अल्लह तआ़ला जब भी तौफ़ीक़ दे किसी रस्म की पाबन्दी के बग़ैर कुरआन शरीफ पढ़ कर या कल्मा पढ़ कर या ग़रीबों को खिला पिला कर या खाना कपड़ा या नक़्द ग़रीबों को दे कर या कोई भी नेक काम, नफ्ली इबादत करने के बाद अल्लाह तआला से दुआ करें कि ऐ अल्लाह मेरे इस अमल को क़बूल फरमा और इस का सवाब फुलां की रूह को बख़्श दे फिर दुरूद पढ़ें यही सवाब पहुंचाना है। और यही फातिहा है। वफ़ात पाने वाले को फाइदा पहुंचाने और उससे तअल्लुक़ बाक़ी रखने का शरीअ़त के मुताबिक़ यह बेहतरीन तरीक़ा है बुज़ुर्गों की फ़ातिहा का भी यही तरीक़ा है। तीजा चालीसवां बर्सी में अज़ीज़ व अक़ारिब को दावत खिलाना सहाब–ए–किराम से साबित नहीं। यह बिदअ़त है इनसे बचें मय्यित की मग़फिरत की दुआ खूद करें दूसरों से करवाएं लेकिन ईसाले सवाब के लिए दूसरों को मुकल्लफ़ न करें कोई खुद से कर दे तो अच्छी बात है।

लाभान्वित द्वारा

इल्मलफ़िक्ह (मौलाना अब्दुश्शकूर फारूक़ी रह0)

इस्लामी फ़िक़्ह (मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी रह0)

फ़िक्हुस्सुन्नः (मुहम्मद आ़सिम अलह़द्दाद) ❑❑

दुआ़

या ख़ुदा अमराज़ से पाऊँ शिफ़ा
बख़्श कर इस्याँ तू कर दे दिल सफ़ा
तेरी चौखट पर रहे सज्दा मेरा
जो किया वादा है वो होये वफा
ख़ल्क़ की खिदमत की तू तौफीक़ दे
अब न हो मुझ से कभी जौरो जफ़ा
रखता हूँ उलफ़त नबीये पाक से
मांगता हूँ रहमतें उन पर सदा
तेरी मर्ज़ी ही में गुजरे ज़िन्दगी
और तू हरगिज़ न हो मुझ से ख़फ़ा

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एहराम किसे कहते हैं और एहराम बाँधने से क्या मुराद है?

उत्तरः आम बोल चाल में एहराम उन दो चादरों को कहते हैं जो हज के दौरान मर्द हाजी पहनते हैं एक चादर, लुंगी की तरह पहन लेने और दूसरी चादर ऊपर से ओढ़ लेने को एहराम बाँधना कहते हैं। यह एहराम बाँधना आम बोल चाल का है।

दूसरा एहराम इस्तिलाही (पारिभाषिक) है इस एहराम का मतलब होता है हज या उम्रे की नीयत करके लब्बैक पढ़ना। इस एहराम के बिना हज या उम्रे का मुसाफिर मीक़ात पार करके अगर हरम की तरफ चला जाए तो उस पर दम (एक कुर्बानी) का जुरमाना होगा या फिर मीकात पर लौट कर एहराम बाँध ले, इस एहराम के बिना न हज हो सकता है और न उम्रा।

प्रश्नः हज या उम्रे का एहराम बाँधने का क्या तरीक़ा है?

उत्तरः हज या उम्रा करने वाले को चाहिए कि वह सर के बाल ठीक करा ले, लबें काट लें नीचे और बगल के बाल साफ करले, नाखुन काट ले फिर अच्छी तरह नहा धो ले फिर मर्द दो चादरें पहन ले एक चादर तहबन्द की तरह बाँध ले, दूसरी ऊपर से ओढ़ ले, खूशबू भी लगा ले औरतें अपने लिबास में रहेंगी, फिर वुजू न हो तो वुजू करके दो रकअ़त नमाज़ पढ़े, अच्छा है कि पहली रकअ़त में सूर–ए–फातिहा के बाद सूर–ए–काफ़िरून और दूसरी रकअ़त में सूर–ए–इख़लास मिलाएं फिर सलाम फेर कर मर्द सर खोल दें और औरतें चेहरे पर से कपड़ा हटा दें और उम्रा या हज जिस का इरादा हो नीयत करके मर्द ज़ोर से लब्बैक पढ़ें औरतें आहिस्ता, एक बार लब्बैक पढ़ना फर्ज़ है तीन बार पढ़ना सुन्नत है बस एहराम बँध गया। जिस तरह नमाज़ में नीयत ज़रूरी है और अल्लाहु अक्बर तकबीरे तहरीमा कहना ज़रूरी है इसी तरह एहराम के लिए नीयत और लब्बैक पढ़ना ज़रूरी है। इन दोनों कामों के बिना एहराम नहीं बँध सकता। याद रहे कि नमाज़ की नीयत के बाद ज़रूरत पर नीयत तोड़ कर नमाज़ से बाहर आ सकते हैं और उसके बदले दोबारा नीयत करके उस नमाज़ का बदल कर सकते हैं लेकिन एहराम की नीयत के बाद उम्रा या हज किये बिना एहराम से बाहर नहीं आ सकते अगर कोई रुकावट हो जाए तो एक कुर्बानी करके ही एहराम से बाहर आ सकते हैं।

हैज़ व निफ़ास वाली औरतें भी एहराम के लिए नहाएंगी अगर्चि वह पाक न होंगी मगर साफ तो हो जाएंगी वह उसी हालत में एहराम की नीयत करेंगी और लब्बैक पढेंगी। नमाज़ की नीयत मुकम्मल पाकी के बिना

नहीं हो सकती है मगर हज या उम्रे की नीयत औरत हैज़ व निफास की नापाकी की हालत में करेगी।

प्रश्नः मीकात किसे कहते हैं?

उत्तरः मक्का मुकर्रमा के अलावा जो लोग मक्के से दूर के शहरों या मुल्कों से हज या उम्रे की नियत से मक्का मुकर्रमा का सफर करते हैं तो मक्का मुकर्रमा से काफी फासले पर उसके चारों ओर कुछ जगहें मुकर्रर हैं हज या उम्रा करने वालों के लिए उन जगहों की सीध से एहराम के बिना आगे बढ़ना मना है, उन जगहों को मीक़ात कहते हैं। हिन्दुस्तान की तरफ से सफर करने वालों के लिए मीक़ात "यलमलम" है उसके सीध से एहराम के बिना आगे बढ़ना हाजियों के लिए मना है, अगर बढ़ गये तो लौट कर मीक़ात पर एहराम बाँधें वरना दम देना पड़ेगा, लिहाजा हज व उम्रे के मुसाफिरों को चाहिए कि अपने हवाई अड्डे पर एहराम की नीयत करके लब्बैक पढ़ लें यानी एहराम बाँध लें।

प्रश्नः लब्बैक क्या है?

उत्तरः "लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन्निअ़मत लक वल मुल्क़ लाशरीक लक" इन कलिमात को पढ़ने को लब्बैक पढ़ना कहते हैं।

प्रश्नः एहराम बाँधने के बाद किन किन बातों से बचना ज़रूरी है?

उत्तरः एहराम बाँधने वाले को मुहरिम कहते हैं, मुहरिम के लिए ज़रूरी है कि वह हर बुराई से बचे, खास तौर से लड़ाई झगड़े से बचे, मियाँ–बीवी के ख़ास ताल्लुकात बिल्कुल मना हैं। हंसी मज़ाक़ और बीवी का बोसा लेना भी मना है, मर्द सिले कपड़े न पहनें, बनियान, मोज़े, दस्ताने पहनना भी मना है, जूते चप्पल ऐसे हों कि पैर के ऊपरी हिस्से की बीच वाली हड्डी जो उभरी दिखती है वह बन्द न हो, खुशबू न लगाएं, नाखुन न काटें, बाल न उखाड़ें न काटें, मैल मल कर न झुड़ाएं कोई जानवर न मारें यहां तक कि जूं और चीलर भी न मारें बल्कि उनको बदन से अलग भी न करें, मर्द सर न ढकें औरतें चेहरे पर कपड़ा न डालें, अजनबी से चेहरा छुपाने के लिए औरतें पंखे वगैरह से आड़ कर लें।

प्रश्नः एहराम में जो चीजें मना हैं अगर उनमें से कोई बात एहराम वाले से हो जाए तो क्या करे?

उत्तरः खूब एहतियात करे कि कोई मना काम एहराम की हालत में न हो लेकिन अगर कुछ हो जाए तो किसी जानकार से मालूम करके उस पर अमल करे, इसलिए कि इसकी बड़ी तफ्सील है।

प्रश्नः उम्रे में कितनी बातें फ़र्ज़ हैं?

उत्तरः पहली बात एहराम तो शर्त है उसके बिना न उम्रा हो सकता है और न हज, उम्रे का एहराम मीकात पर बांधा जाएगा, अगर मक्के में रह कर उम्रा करना हो तो हरम से बाहर हिल में जाकर एहराम बांधें, आमतौर से मस्जिदे तनईम (मस्जिदे आइशा) जा कर उम्रे का एहराम बान्धते हैं।

दूसरा काम उम्रे में काबे का तवाफ़ (मये रमल व इजतिबअ़) यह रुक्न (फ़र्ज़)

है, तीसरा अहम काम सफा व मरवा के बीच सई करना है, सफा व मरवा के बीच सई वाजिब है फिर सर मुंडा के या कतरा के औरतें अपनी चोटी से एक अंगुल बाल कंाट कर एहराम से बाहर हो जाएं यानी हलाल हो जाएं बस उम्रे में यही चार काम अहम हैं। (1) एहराम, (2) तवाफे काबा, (3) सई, (4) बाल काटना या मुंडवाना।

प्रश्नः हज्जे इफ़्राद किसे कहते हैं और वह कैसे किया जाता है?

उत्तरः इफ़्राद हज जिसमें सिर्फ हज किया जाता है, मीक़ात या उससे पहले सिर्फ हज की नीयत से एहराम बांधा जाता है फिर मक्का मुकर्रमा पहुंच कर सामान वगैरह महफूज़ करके गुस्ल करले वरना बा बुजू हरम शरीफ में हाजिर हों, मस्जिद में दाखिल होने की दुआ पढ़ कर हरम में दाखिल हों, काबे को देख कर खूब दुआएं करें फिर खान–ए–काबा का तवाफ करे यह तवाफ तवाफे कुदूम है और यह इफ़्राद हज़ करने वाले के लिए सुन्नत है। अब हस्बे तौफ़ीक़ तवाफ और दूसरी इबादतों का सवाब लेता रहे, एहराम का खूब ख़्याल रखे फिर 8 जिलहिज्जा को मिना जाऐं, 9 तारीख को अरफ़ात जाएं वहां दिन गुजारें यह रुक्न यानी फ़र्ज़ है फिर मग़रिब का वक्त हो जाने पर मग़रिब पढ़े बिना मुज़दलिफ़ा आएं वहां मगरिब व इशा एक साथ पढ़ें यहीं रात गुज़ारें फज्र की नमाज पढ़ कर ज़रा रुकें यानी वुकूफ़ करें यह वाजिब है। फिर मिना आकर बड़े शैतान (जमर–ए–अक्बा) को सात कंकरियां मारें, यह वाजिब है फिर सिर मुंडा लें या कतरा लें औरतें अपनी चोटी से एक अंगुल बाल काट लें यह वाजिब है। फिर एहराम उतार कर नहा धो कर या एहराम ही में हरम जाकर तवाफे ज़ियारत करें यह रुक्न यानी फर्ज है, अगर एहराम में हों तो रमल और इज़तिबाअ़ भी करें। एहराम उतार चुके हों तो रमल के साथ तवाफ़े ज़ियारत कर लें। अब सई करें यह वाजिब है। यह सई तवाफ़े कुदूम के बाद भी की जा सकती थी।

11, 12 को तीनों जमरात को कंकरियां मारें यह वाजिब है फिर घर वापसी से पहले तवाफे वदाअ़ करे यह भी वाजिब है बस हज्जे इफ़्राद हो गया। हमने सिर्फ ज़रूरी ज़रूरी बातें बयान की इनमें से कोई बात न छूटे तो इनशाअल्लाह हज हो जाएगा। अल्लाह तौफीक़ दे तो सुन्नतों और मुस्तहब्कात का भी एहतिमाम करके खूब सवाब लें कि हज का मौका बार–बार नहीं मिलता। हज्जे इफ़्राद में एहराम बांधने के बाद से हज मुकम्मल होने तक एहराम में रहना पड़ता है। हज्जे इफ़्राद में तवाफे कुदूम के बाद अगर सई कर ले तो तवाफे जियारत के बाद सई नहीं करना होती है।

प्रश्नः हज्जे क़िरान किसे कहते हैं और यह कैसे किया जाता है?

उत्तरः हज्जे किरान उस हज को कहते हैं जिसमें एक एहराम से उम्रा व हज दोनों किये जाते हैं, किरान हज करने वाले को कारिन कहते हैं। इसका तरीक़ा यह है कि

हज के ज़माने में मीकात में या उससे पहले जब एहराम बांधे तो एहराम की नीयत में उम्रा व हज दोनों की नीयत एक साथ करें कहें "ऐ अल्लाह मैं उम्रे और हज की नीयत करता हूं इसे मेरे लिए आसान फ़रमा" फिर लब्बैक पढ़ें, मक्का मुकर्रमा पहुंच कर पहले उम्रे का तवाफ और सई करे मगर बाल न काटे न मुंडाए कि इसी एहराम से उसको हज करना है फिर तवाफ़े कुदूम करें, चाहें तो हज की सई अभी कर लें चाहे तवाफ़े ज़ियारत के बाद करें, जिस तवाफ के बाद सई करें उस तवाफ़ में रमल करें और इज़तिबाअ़ भी करें। फिर एहराम की पाबन्दियों के साथ वक्त गुज़ारें और आठ ज़िलहिज्जा आने पर हज्जे इफ़्राद की तरह हज के अरकान पूरे करें मगर किरान में जमर–ए–अक्बा की रमी के बाद कुर्बानी भी वाजिब है।

प्रश्नः तमत्तुअ़ हज किसे कहते हैं और वह कैसे किया जाता है?

उत्तरः तमत्तुअ़ हज करने वाले को मुतमत्तिअ़ कहते हैं, इसमें हज के महीनों में या उसके पहले जब एहराम बांधते हैं तो सिर्फ उम्रा करके हलाल हो जाते हैं, फिर आठ ज़िलहिज्जा को अपने मकाम ही पर हज का एहराम बांध कर मुफरिद की तरह हज पूरा करते हैं। इस हज में भी जम–र–ए–अकबा की रमी के बाद कुर्बानी वाजिब है। यह हज आसान है हमारे मुल्क के अक्सर लोग यही हज करते हैं।

प्रश्नः किसी पर हज फर्ज हो तो उसका फ़र्ज़ इफ़्राद, तमत्तुअ़, किरान किस हज से पूरा होगा?

उत्तरः तीनों किस्मों में से जो भी हज करेगा उससे उसका फ़र्ज़ अदा हो जाएगा। लेकिन मुफ़रिद को चाहिए कि हज के बाद मौका निकाल कर उम्रा भी करले।

प्रश्नः तवाफ करने का क्या तरीक़ा है?

उत्तरः तवाफ करने वाले को हर तरह पाक व साफ और बा वुजू होना ज़रूरी है। काबे शरीफ के दक्खिनी पूर्वी कोने पर हजरे अस्वद लगा है, तवाफ करने वाला हजर के पास काबे की तरफ मुंह करके इस तरह खड़ा हो कि हजर उसके दाहने हाथ की तरफ हो फिर वह नियत करे कि ऐ अल्लाह मैं तवाफ की नीयत करता हूं इसे मेरे लिए आसान कर दे यह नीयत फर्ज़ है, नीयत के बिना तवाफ न होगा। अब दाहने हट कर हजर के सामने आ जाएं और कानों तक हाथ उठा कर अल्लाहु अक्बर कहे फिर हजर का इस्तिलाम करे यानी उसको मुंह से चूम लें या हाथ लगा कर हाथ चूम ले, और तवाफ़ शुरुअ़ कर दे। इस ज़माने में हाजियों की कसरत के सबब इतनी भीड़ होती है कि हर एक के लिए इसतरह नीयत और इस्तिलाम मुमकिन नहीं, इसलिए हजर के सीध में एक हरी बत्ती जला दी गई है, बस तवाफ़ करने वाला उस बत्ती के सीध पर पहुंच कर जल्दी से नीयत करे और वहीं से हजर की तरफ हाथ से इशारा करे और अल्लाहुअक्बर कहे, इस्तिलाम हो गया अब तवाफ़ शुरु करदे

तवाफ करते वक्त काबा बाईं तरफ रहता है, और काबे के करीब से तवाफ का मौका मिले तो हतीम के बाहर से गुजरे अन्दर से न गुज़रे, तवाफ में जो दुआएं चाहे पढ़े चाहे कुर्आन शरीफ की सूरतें पढ़ें, दुरूद पढ़ें, अल्लाह का ज़िक्र करे तवाफ करने वाले को इख्तियार है, जब पश्चिम दक्खिन कोने (रुकने यमानी) पर पहुंचे तो करीब हो तो उसे दाहने हाथ से छू ले दूर हो तो कुछ न करे रुकने यमानी और हजर के बीच रब्बना आतिना फिदुनिया हसनतंव्वफिल आखिरति हसनतंव्व व किना अज़ाबन्नार, पढ़े हजर के सीध पर पहुंचने पर एक चक्कर हो गया अब हजर की तरफ हाथ से इशारा करके अल्लाहु अक्बर कहे (यह हजर का इस्तिलाम है) दूसरा चक्कर पूरा करे इस तरह सात चक्कर पूरे करे और आठवीं बार इस्तिलाम करके मताफ से निकल कर दो रकअत नमाज़ पढ़े यह नमाज़ वाजिब है, मुमकिन हो तो इसे मकामे इब्राहीम के पीछे अदा करे वरना हरम में चाहे जहां पढ़े, अच्छा है कि पहली रकअत में सूर–ए –फातिहा के बाद सूर–ए– काफिरून मिलाए और दूसरी रकअत में सूर–ए–इख़लास मिलाए। अब पेट भर कर ज़मज़म पिये तवाफ मुकम्मल हुआ।

उम्रे का तवाफ और तवाफे कुदूम एहराम में किया जाता है, तवाफे जियारत भी कभी एहराम में किया जाता है। याद रहे तो तवाफ एहराम में किया जाए और उसके बाद सई करना हो तो इस तवाफ के पहले तीन चक्करों में रमल करना सुन्नत है यानी मर्द हाजी ज़रा सीना तान कर करीब करीब कदम रखते हुए चलें सिर्फ तीन चक्करों में, औरतें रमल न करें मर्द हाजी सातों चक्करों में इज़तिबाअ करें यानी मर्द ऊपर की चादर दाहने कन्धे के नीचे से निकाल कर बाएं कन्धे पर डाल लें यह दोनों सुन्नतें सिर्फ मर्दों के लिए हैं। अगर एहराम उतार कर आम कपड़ों में तवाफे ज़ियारत करें और तवाफ के बाद सई करना हो तो तीन चक्करों में रमल करें।

प्रश्नः सई करने का तरीका क्या है?

उत्तरः सई सफा व मरवा के बीच सात बार चलने को कहते हैं, बेहतर है पैदल चलें मजबूरी हो तो चियर पर चलें। उसका तरीका यह है कि हजर का इस्तिलाम करके (मुमकिन हो तो बोसा देकर मुशकिल हो तो उसकी तरफ दूर से इशारा करके अल्लाहु अक्बर कहें फिर सफा पर आ कर यह पढ़ें "इनस्सफा वल मरवत मिन शआइरिल्लाह" फिर सफा पर कुछ चढ़ें और हाथ उठा कर कलम–ए–तौहीद पढ़ें और मरवा की तरफ चल दें थोड़ी दूर पर दो हरी बत्तियां दिखेंगी उनके बीच मर्द ज़रा झपट कर चलें औरतें अपनी चाल ही से चलें मरवा पहुंचने पर एक शौत (चक्कर) हो गया, अब मरवा से सफा आएं पहले की तरह दोनों हरी बत्तियों के बीच मर्द झपट कर चलें सफा पहुंचने पर दो शौत (चक्कर) हो गये इस तरह सात शौत पूरे करें जो मरवा पर पूरे होंगे, बस सई हो गई, सई में भी ज़िक्र व दुआवों में

मशगूल रहना चाहिए। सई में सात शौत पूरे करना ही ज़रूरी हैं। सई में अगर वुज़ू टूट जाए तब भी सई हो सकती है, लिहाज़ा वूज़ू टूट जाने पर वुज़ू करने न जाएं।

प्रश्नः सई कब की जाती है?

उत्तरः उम्रे के तवाफ के बाद सई करना वाजिब है। इफ्राद हज करने वाले के लिए इख़्तियार है कि सई चाहे तवाफ़े कुदूम के बाद करे चाहे तवाफ़े ज़ियारत के बाद अगर तवाफ़े कुदूम के बाद सई करेगा तो सई में लब्बैक भी पढ़ेगा। क़ारिन दो सई करेगा तवाफ़े उम्रा के बाद और तवाफ़े ज़ियारत के बाद मुतमत्तिअ़ दो सई करेगा एक उम्रे की दूसरी हज की सई।

प्रश्नः हतीम और मक़ामे इब्राहीम किसे कहते हैं?

उत्तरः क़ाबे के उत्तर की तरफ एक घेरा बना है यह काबे में शुमार होता है इसे हतीम कहते हैं। काबे के पूरब की तरफ एक पत्थर में पैर के दो निशान एक शीशे में घेर दिये गये हैं इसको मकामे इब्राहीम कहते हैं।

प्रश्नः हाजी को मदीना तय्यिबा कब जाना चाहिए और वहां उसको क्या करना चाहिए?

उत्तरः मदीना तय्यिबा के सफर में हाजी को इख्तियार नहीं होता, वहां की इन्तिजामिया और हज कमेटी नज्म करती है, किसी को हज से पहले किसी को हज के बाद में मौक़ा मिलता है। जब मदीने का सफर हो तब रास्ते में खूब दुरूद व सलाम पढ़ें, खूब दुआएं करें मदीना तय्यिबा पहुंच कर सामान वग़ैरह महफूज़ करके बावूज़ू मस्जिदे नबवी का रुख़ करें मस्जिद में दुरूद व दुआ पढ़ कर दाख़िल हों, फौरन दो रकत तहीयतुल मस्जिद पढ़ें फिर रौज़–ए–मुनव्वरा पर हाज़िर हो कर प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम करें, फिर हज़रत अबू बक्र रज़ि0 को सलाम करें फिर हज़रत उमर रज़ि0 को सलाम करें, फिर मस्जिद में नवाफ़िल व तिलावत व ज़िक्र में मशग़ूल हों। इन्तिजामिया की जानिब से वहां हर हाजी को 40 फर्ज़ नमाज़ें अदा करने का वक़्त दिया जाता है इस वक्त को ग़नीमत जानें और चालीस फर्ज़ नमाज़ें मस्जिदे नबवी में जमाअ़त से अदा करें और जिस क़द्र तौफीक़ मिले रौज़े पर हाजिर हो कर सलाम करें और खूब दुरूद शरीफ पढ़ें। वहां से वापसी पर आँसू बहाते हुए मदीना तय्यिबा से रुख़्सत हों। अल्लाह तआला तौफीक़ से नवाज़े और आप का हज हज्जे मबरूर हो।

नोटः हज बड़ी अहम तरीन इबादत है यहां जवाबात में सिर्फ जरूरी बातें लिखने पर इक्तिफा किया जाता है। ख़ास तौर से अरबी दुआएं नहीं लिखी जा सकती हैं। हज करने वाले को चाहिए की अगर वह पढ़ा हो तो कोई मोतबर किताब साथ रखे या किसी जानकार का साथ ले और कोशिश करके अल्लाह तौफीक़ दे अच्छा से अच्छा हज करे। अल्लह तआला तौफीक़ से नवाज़े आमीन!

❖❖❖

तेरे नबी का उम्मती

नफ्सो शैतां ने कराए, मुझसे हैं बे हद गुनाह
या इलाही तौबा तौबा, दिल हुआ मेरा सियाह
नादिमो ताइब है यह तेरे नबी का उम्मती
बख़्श दे इसको तू या रब और चला बस अपनी राह
तेरी रहमत के सिवा कोई सहारा है नहीं
तू न बख़्शेगा तो ये हो जाएगा बिल्कुल तबाह
तेरी रहमत खास का करता है ये बन्दा सुवाल
ताईबों को अपनी रहमत में देता है तू पनाह
रहमतें या रब नबी पर और हों लाखों सलाम
मुझ को भी रहमत में अपनी तू जगह दे या इलाह
रब्बना ज़लमना अनफुसना व इल्लम तग़फ़िरलना
व तरहमना लनकूनन्ना मिनलखासिरीन

मानवता का सन्देश

अल्लाह को धन्यवाद है कि हम मानव हैं! इस धरती पर अनगिनत सृष्टियाँ हैं। उनमें मानव अथवा मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए कि इसको उन्नति प्रदान करने वाली, उन्नतिशील बुद्धि मिली हैं। बुद्धि तो सभी जीव धारियों को मिली है, परन्तु उनकी बुद्धि केवल उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक हैं। चारा मिला खा लेंगे, पानी मिला पी लेंगे नहीं मिला और बंधें नहीं हैं खुले हैं तो चल फिर कर ढूंढेंगे जहाँ मिलेगा खा पी लेंगे। उनकी बुद्धि इस प्रकार की नहीं है कि लहलहाते गेहूँ के खेत और उसके निकट हरी भरी घास में अंतर कर सकें, जो सामने आया उसमें मुंह मार देंगे, गड्ढे में गन्दा पानी भरा है, नान्द में साफ पानी भरा हे इसमें वह अंतर नहीं कर सकते, जो आगे आया उसमें से पी लेंगे। मारोगे तो इतनी बुद्धि है कि मार से भागेंगे लेकिन यह समझ कदापि नहीं है कि क्यों मारे गये, ऐसा काम न करें कि न मारे जाएं। चोट पर दुख पर उनको रोना नहीं सिखाया गया, खुशी पर उनको हंसना हनीं सिखाया गया, वह बीमार हों, कोई रोग लग जाए, आप उनको पशु चिकित्सालय ले जाएं दवा खिलाएं अच्छे हो जाएं, फिर बीमार पड़ें, आप उनको खोल दें उनके कान में कह दें अस्पताल चले जाओ वह न जाएंगे इसलिए कि इतनी समझ वाली बुद्धि नहीं रखते। सत्य यह है कि वह चलते फिरते वनस्पति हैं। परन्तु मानवजाति को ऐसी बुद्धि मिली है कि उसकी बुद्धि की समीक्षा सरल नहीं। इसकी बड़ी विशेषता तो यह है कि इसकी बुद्धि, उन्नति देने वाली है। निःसन्देह चींटी जिस प्रकार से अपना घर बनाती है मनुष्य के बस की बात नहीं परन्तु वह सहस्त्रों वर्ष पहले जैसे अपना घर बनाती थी, आज भी उसी प्रकार बनाती है तनिक भी अन्तर न कर सकी, यह सत्य है कि उनको जो स्थिर बुद्धि दी गई वह आश्चर्य जनक है। बया का घोंसला, मधुमक्खी का छत्ता, उसमें मधु का एकत्र करना, मच्छरों ओर खटमलों के खून चूसने की विधि, दीमकों का लकड़ी खा कर मिट्टी में बदल देना, केचुओं का मिट्टी खा कर नीचे से ऊपर कर देना, पखेरुओं का हवा में उड़ना, मछलियों का पानी में तैरना, उसी में रहना और पानी से ऑक्सीजन लेना आदि, यह वह आश्चर्यजनक कार्य हैं जो वह अपनी स्थिर बुद्धि से भली भांति करते हैं, परन्तु उनके इन कार्यों में लेश मात्र उन्नति न हुई न हो सकेगी, इसलिए कि उनकी बुद्धि स्थिर है।

इसके विपरीत मानव बुद्धि मनुष्य को एक दशा में ठहरने ही नहीं देती, कभी यही मानव पहाड़ की खोहों में रहता था, जंगल के फल फलारी खाता था, पत्थर फेंक कर

जंगली पशुओं को मार गिराता फिर उनको पत्थर, लकड़ी, हड्डी के यंत्रों से चीड़ फाड़कर कच्चा खा जाता। कहीं जाना होता तो पैदल चलकर जाता। आज मनुष्य मोटर साईकिल पर चलता है, कार पर चलता है, रेल गाड़ी पर सोते हुए भागता है, आकाश में विमान द्वारा उड़ता है। रास्ता चलते अमरीका, लन्दन, अरब आस्ट्रेलिया, अफ्रीका से बातें करता है, कच्चा मांस नहीं बिरयानी, पुलाव, बाक़र ख़वानी, शीरमाल, पराठा, कबाब, हल्वा, पूड़ी कितनी स्वादिष्ट मिठाइयाँ, कितने स्वादिष्ट नमकीन बनाता और खाता है।

अब वह नंगा नहीं रहता, न अपनी प्राकृतिक लज्जा से पत्तों और खाल से लज्जा अंग, छुपाता है। कोई सीमा है उसके प्रगति की, कोई गिन्ती है उसके वस्त्रों के प्रकारों की। हम बूढ़े तो उनके नाम भी नहीं ले पाते, गिनना तो दूर की बात है। अब वह खोहों में नहीं रहता, खोहों से निकल कर उसने न जाने कितने प्रकार के घर बनाए। एयर कन्डीशन, विद्युत से जगमग, अब कुंए, नदी, तालाब से पानी नहीं लाना है, टोंटी खोलें, पानी पाएं, जाड़ों में गर्म पानी लें, गर्मियों में ठण्डा पानी लें, यह सब मानव की उन्नतिशील बुद्धि का चमत्कार है।

हमारे बाघ और चीते जिनकी बुद्धि सीमित तथा स्थिर है, वह तो केवल अपने मतलब के लिए आप्रेशन करना जानते हैं चीड़ा, फाड़ा, खाया चल दिये, उनकी यह चीड़ फाड़ मानव की चीड़ फाड़ से पहले की है कारण यह कि उनका जीवन ही इसी चीड़ फाड़ पर निर्भर है परन्तु आज तक वह दूसरों के लाभ के लिए कोई आप्रेशन न कर सके, आखिर मनुष्य भी तो आरम्भ में इसी प्रकार चीड़ फाड़ करता था परन्तु उसकी उन्नतिशील बुद्धि ने आज उसको कहां पहुंचा दिया, आँख, नाक, कान, मस्तिष्क, हृदय, फेफड़े, पित की थैली, गुर्दे, शरीर का कौन सा अंग है जिसका सफल आप्रेशन नहीं होता, कितने खराब अंग निकाल कर दूसरों से लेकर लगा दिये जाते हैं, दाँत और कई स्थानों की हड्डियाँ बनाकर लगा दी जाती हैं।

यही मनुष्य जो पहले खोहों में रहता था वह अब भव्य भवनों में मिल जुल कर रहने लगा गांव बसे, टाऊन बने, नगर बसे, पहले जिन लोगों ने कुछ गांवों तथा नगरों का प्रतिबन्ध किया वह राजा कहलाए, उन्नति होती रही रहन, सहन के विधान बने, व्यक्तित्य राज्य समाप्त हुए, जनतंत्र आया जहां के लोगों ने वैधानिक नियमों को अपनाया वहां शान्ति रही जहां वैधनिक नियमों का उल्लंघन हुआ वहां जीवन में कठिनाइयाँ आईं, अत्याचार ने जन्म लिया, रक्तपात के खेल खेले जाने लगे। निःसन्देह विधान में इन समस्याओं के समाधान का प्रावधान है, कारागार हैं, आर्थिक दण्ड हैं, परन्तु जब पापों का प्रचलन हो गया तो दण्ड से बचने के लिए छुप कर पाप होने लगे ऐसे में विधान फेल होता दिखा। क्या आपने कभी सोचा कि फिर इस जटिल समस्या का समाधान

कैसे हो? इस समस्या का समाधान तभी सम्भव है जब मन में यह बात बैठी हो कि कोई दृष्टि ऐसी भी है जो हमारी हर दशा को देखती है, हम सात कोठरियों के भीतर, रात के अंधेरियों में कोई भी कार्य करें, भला या बुरा, उस दृष्टि से छुप नहीं सकते, वह दृष्टि है सृष्टि के सृष्टा की जिसे कोई अल्लाह कहता है, कोई ईश्वर कहता है, कोई खुदा कहता है, कोई गाड कहता है। यहां प्रश्न उठता है कि उस ईश्वर को समझने, उससे परिचित होने और उसको पा लेने का साधन क्या है?

सत्य यह है कि हमारी उन्नतिशील बुद्धि इतना मानने पर तो विवश है कि इस संसार का कोई निर्माता अवश्य है। जब एक पेन्सिल, एक पेन, एक कप, एक घड़ी बिना बनाए नहीं बन सकती तो यह सूर्य जो सारे जगत को प्रकाश तथा ताप देता है और उसके उदय तथा अस्त के नियम में कभी भी अंतर नहीं होता, स्वतः कैसे बन सकता है, यह धरती, यह आकाश, यह गगन मंडल, यह सहस्त्रों प्रकार की सृष्टि आप ही आप कैसे अस्तित्व में आ सकती है? कोई अपार शक्ति अवश्य इन सबको रचने वाली है।

आप ध्यान दीजिये साइंस में हम इतने आगे जा चुके हैं कि खून, थूक, खखार, मल मूत्र का एक एक अंश हमारा पैथालोजिस्ट स्पष्ट करके बताता है, अल्ट्रासाउण्ड, एक्से आदि क्या क्या बता देते हैं, परन्तु नहीं बता पाते तो प्राणों के विषय में कुछ भी नहीं बता पाते कि यह कहाँ से आते हैं कहाँ चले जाते हैं। कोई मशीन आज तक यह भेद न खोल सकी।

यदि अल्लाह पथ प्रदर्शन न करता तो यह बुद्धि सर पटक के मर जाती और कुछ भी समझ न पाती।

कैसे फिर होता अहो, मानव का उद्धार।
यदि सन्देश न भेजता, अपना जगदाधार।।

हाँ–हाँ मनुष्य टेक्नालोजी में बहुत आगे जा चुका है और बराबर चला जा रहा है। साइंस बहुत आगे जा चुकी है और चली जा रही है विमानों का आविषकरण ही क्या कम था अब उसकी गति तथा उसके वेग की कोई सीमा है। कैसे कैसे यंत्र, राकेट, एटम बम, हाइड्रोजन बम और पता नहीं कौन कौन से बम। चन्द्रमा में राकेट द्वारा मनुष्य पहुंच कर लौट भी आया अब अपोलो की तैयारी है। राकेट छोड़ा जा चुका है जो एक सिकेण्ड में 16 किलो मीटर की गति से जा रहा है 16 जनवरी 2006 में छोड़ा हुआ राकेट इस वेग से चल कर साढ़े नौ वर्षों के पश्चात 14 जुलाई 2015 अपोलो पर उतरेगा इन उन्नतों को उन्नति नहीं चमत्कार ही कहना चाहिए परन्तु ज़रा इन चमत्कारियों से पूछिये और स्वयं सोचिये अण्डे से मुर्गी निकलती है और मुर्गी से अण्डा इनमें पहले कौन पैदा हुआ और कैसे? इसी प्रकार सोच डालिए पुरुष पहले पैदा हुआ या स्त्री और कैसे? सत्य यह है कि किसी के पास भी उचित उत्तर नहीं है। इसका उत्तर है तो उसी के पास जिसको उसके पैदा करने वाले ने स्वयं सुझाया।

यह जो आप हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, सिख धर्म, ईसाई धर्म, यहूदी धर्म देख रहे हैं यह किसी की बुद्धि से नहीं बने हैं। यद्यपि मुझे इस्लाम के अतिरिक्त किसी धर्म का भरपूर ज्ञान नहीं है परन्तु कई धर्मों के मौलिक तत्वों का अध्ययन किया है और उसके आधार पर कह सकता हूँ कि हर धर्म वाले का यही कहना है कि हमारा धर्म ईश धर्म और हमारा धार्मिक ग्रन्थ ईशवाणी है। और इस कथन को झुटलाने के लिए हमारे पास कोई उचित तर्क भी नहीं है। बस एक बात खटकती है कि जब सब एक मालिक, एक विधाता, एक निर्माता मानते हैं तो यदि सभी धर्म उसी के हैं तो इन सबमें मतभेद क्यों है। इतना मतभेद कि एक दूसरे का विलोम, यहां यह बात तो स्पष्ट है कि इसका कारण मानवीय हस्तक्षेप है परन्तु इस झगड़े में पड़ना हमारे मिशन के खिलाफ है। ऐसी स्थिति में जब हमको एक साथ रहना है और हमारे धर्मों में प्रतिकूलता

शेष पृष्ठ..... 39 पर

उसके सामने यह हकीकत अच्छी तरह आ गई कि इस कायनात में कुछ और अवामिल (काम करने वाले) व महर्रिकात हैं जो अफराद व अक्वाम की तदबीर पर उससे कहीं ज़्यादा असर अन्दाज़ हैं, जितने की यह तबई और ज़ाहिरी अस्बाब, इसी तरह उनसे जो नताएज ज़ाहिर होते हैं वह उन तबई और माद्दी नताइज़ से बहुत ज़्यादा इन्किलाब अंगेज़ (बदलाव लाने वाले) होते हैं जो अस्बाबे से वाबस्ता व मरबूत हैं।

यह अवामिल व मुहर्रिकात ईमान व अमले स्वालेह, अख़्लाके आलिया, खुदा की इताअत व इबादत, अद्ल व इन्साफ रहम व मुहब्बत और इसी तरह के दूसरे मअ़नवी अस्बाव हैं जो कुफ्र व बग़ावत, फसाद, जुल्म व नफ्स परस्ती और गुनाहों से मअ़नवी अस्बाब के बिल्कुल बरअक्स काम करते हैं।

अस्बाबे तब्ई को तर्क किये बगैर अगर कोई इन स्वालेह मअ़नवी अस्बाब को इख़्तियार करेगा तो यह कायनात उससे मुसालहत करने पर मजबूर होगी और ज़िन्दगी अपनी हक़ीक़ी लज़्ज़त व मिठास के साथ उसका साथ देगी। अल्लाह तआला उसके हर काम में सहूलतें और आसानियां पैदा फरमाएगा और बाज़ मौकों पर अस्बाबे तबई भी उसमें पाबन्द कर दिये जाएंगे और खरक़े आदत चीजें ज़ाहिर होने लगेंगी, उसके बरअक्स जो दूसरे किस्म के गैर स्वालेह अस्बाब से अपना तअल्लुक रखेगा और सिर्फ तबई कूवतों पर एतिमाद करेगा और अपनी पूरी ज़िन्दगी इसी बुन्याद पर काइम करेगा तो यह कायनात उसको मुखालिफ़त पर कमर बस्ता हो जाएगी जो ताकतें उसने अपने ताबे कर ली हैं, वह भी उसको धोखा देने लगेंगी, वह हर लमहा उनकी एहतियाज में रहेगा और यह ज़रूरत बढ़ती जाएगी कुदरत उसके खिलाफ होगी, और तबई ताक़तें उसकी राह में रुकावट होंगी।

❖❖❖

प्रेम संदेशा

एक प्रेमी आया है। प्रेम सन्देशा लाया है।।
जिसमें प्रेम का अंश नहीं। वह मानव का वंश नहीं।।
प्रेम सृष्टि विधाता से। दुनिया के निर्माता से।।
प्रेम ईश के भक्तों से। सत्य मार्ग के सन्तों से।।
प्रेम पिता और माता से। प्रेम बहन और भ्राता से।।
पति का प्रेम हो पत्नी से। पत्नी का हो पति जी से।
प्रेम हर एक सम्बन्धी से। प्रेम अकारण बन्दी से।।
प्रेम गुरू और विद्या से। प्रेम नहीं पर मिथ्या से।।
प्रेम कार्य के साथी से। प्रेम हर एक सहपाठी से।।
प्रेम हमें सत्कर्मी से। प्रेम हर एक परिश्रमी से।।
प्रेम हर एक इन्सान से। आदम की सन्तान से।।
प्रेम हो अपने देश से। देश के इक–इक खेत से।।
प्रेम देश के नेता से। प्रेम देश की जनता से।।
प्रेम पशु और पक्षी से। प्रेम तो सारी सृष्टि से।।
प्रेम हो हम को शांति से। उन्नति वाली क्रान्ति से।।
प्रेम हो ध्यान और ज्ञान से। लाभ जनक विज्ञान से।।
प्रेम नहीं शैतान से। प्रेम नहीं अभिमान से।।
प्रेम न झूठे लीडर से। मानव रूपी गीदड़ से।।
प्रेम नहीं परत्रिया से। प्रेम नहीं कुक्रिया से।।
प्रेम नहीं धन दौलत से। प्रेम नहीं कुसंगत से।।
प्रेम न भ्रष्टाचार से। प्रेम न अत्याचार से।।
प्रेम न पक्षापात से। प्रेम न छल उत्पात से।।
प्रेम न रक्ता पात से। प्रेम न आतंकवाद से।।
प्रेम न डाका चोरी से। प्रेम न रिश्वत खोरी से।।
प्रेम न छूता वाद से। प्रेम न वर्णावाद से।।
प्रेम नहीं कुकर्मों से। प्रेम नहीं बेधर्मों से।।
गीत प्रेम के गाओ तुम। सत्य प्रेम अपनाओ तुम।।

मानवता का संदेश.....

है तो हमारा कर्तव्य क्या बनता है? हमको चाहिए कि जिन धार्मिक विश्वासों अथवा कर्मों में प्रतिकूलता है, विभिन्नता है, उनको हम जिसके धर्म में जो है उसको उस धर्म वाले के लिए छोड़ दें और सम्मिलित सभाओं में उसको कभी वाद विवाद में न लाएं, परन्तु ईश्वर से यह प्रार्थना अवश्य करते रहें कि हे जगत के निर्माता! हे हमारे स्वामी हम को सत्य मार्ग दिखा कर उस को ग्रहण करने का सामर्थ्य दे, तथा कुमार्ग दर्शाकर उससे बचने का सामर्थ्य दे। मानवता का सन्देश सम्बन्धित गोष्ठी के मंच पर हम केवल उन बातों की ओर लोगों को बुलाएं जो सभी धर्मों में पाई जाती है। और जो सामाजिक जीवन की शान्ति के लिए अनिवार्य भी है और पर्याप्त भी, उनमें सर्वप्रथम है ईश्वर को उसकी शक्तियों अर्थात गुणों के साथ मानना, यह मानना कि न तो उससे कुछ छुप सकता है, न कोई पापी उसकी पकड़ से बच सकता है।

जारी.....

❑❑

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

रेमंड ने पाकिस्तान में शोरूम खोला-

प्रमुख परिधान ब्रांड रेमंड ने पाकिस्तान में अपना आउटलेट खोला है। यह पाकिस्तान में खाला गया कोई पहला भारतीय आउटलेट है।

कंपनी ने अपनी दुकान यहां के पॉश इलाक़े क्लिफटॉन में खोला है। कारोबारी समुदाय का मानना है कि यह दोनों देशों के व्यापारिक संबंधों को आगे बढ़ाने की दिशा में एब बड़ा कदम है। भारत की सूटिंग एंड फैब्रिक्स कंपनी ने पाकिस्तान के वित्तीय हब में पहली दुकान बिना होहल्ले के खोली है। हालांकि अखबारों में विज्ञापन ज़रूर प्रकाशित किए गए थे। पाकिस्तान में रेमंड की दुकान का संचालन अधिकार हासिल करने वाली कंपनी ने नेक्ससोर्स के निदेशक नजमुस साकिब ने कहा कि यह पाकिस्तान के बाजार में भारतीय ब्रांडों के प्रवेश का पहला कदम है।

सुन्दर भविष्य के निर्माण के लिए एकजुट हों भारत-अमेरिका–

अमेरिकी विदेश मंत्री जॉन केरी भारत के अपने पहले अधिकारकि दौरे पर नई दिल्ली पहुंचे। यहां इंडिया सेंटर में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, 'भारत और अमेरिका विश्व की तीन बड़ी चुनौतियों–अर्थव्यवस्था, सुरक्षा और पर्यावरण में हो रहे बदलावों से निपटने में सक्षम हैं। ऐसे में दोनों देश साथ मिलकर एक सुंदर और मजबूत भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।'

अमेरिकी विदेश मंत्री ने कहा कि वह हिंदी के मुहावरे 'एक और एक ग्यारह होते हैं' पर यकीन करते हैं। दुनिया के सबसे बड़े और सबसे पुराने लोकतंत्र, अमेरिका तथा भारत को सुन्दर भविष्य के निर्माण के लिए भी एकजुट होना चाहिए। भारत और अमेरिका का डीएनए एक है।

सबसे उम्रदराज व्यक्ति का निधन–

दुनिया के सबसे उम्रदराज व्यक्ति जिरोएमोन किमुरा का जापान के क्योटो प्रांत में बुधवार तड़के 116 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। सन् 1897 में जन्मे जिरोएमोन किमुरा ने स्थानीय समय के अनुसार 2:08 बजे आखिरी सांस ली।

सबसे पहले 17 दिसंबर 2012 को गिनीज वर्ल्ड बुक में किमुरा का नाम दुनिया के सबसे उम्रदराज व्यक्ति के रूप में दर्ज किया गया था और उसके एक सप्ताह बाद ही वह 115 वर्ष और 253 दिन की उम्र तक जीने वाले पहले व्यक्ति बन गए।

❖❖❖